चन्दामामा
फरवरी १९७५
1 Re

Photo by: **KODAK LIMITED**

MAKING UP

रसीली प्यारी मज़ेदार

पारले पॉपिन्स

फलों के स्वादवाली गोलियां

५ फलों के स्वाद—
रासबेरी, अननास, नींबू,
संतरा और मोसंबी

everest/981/pp-hn
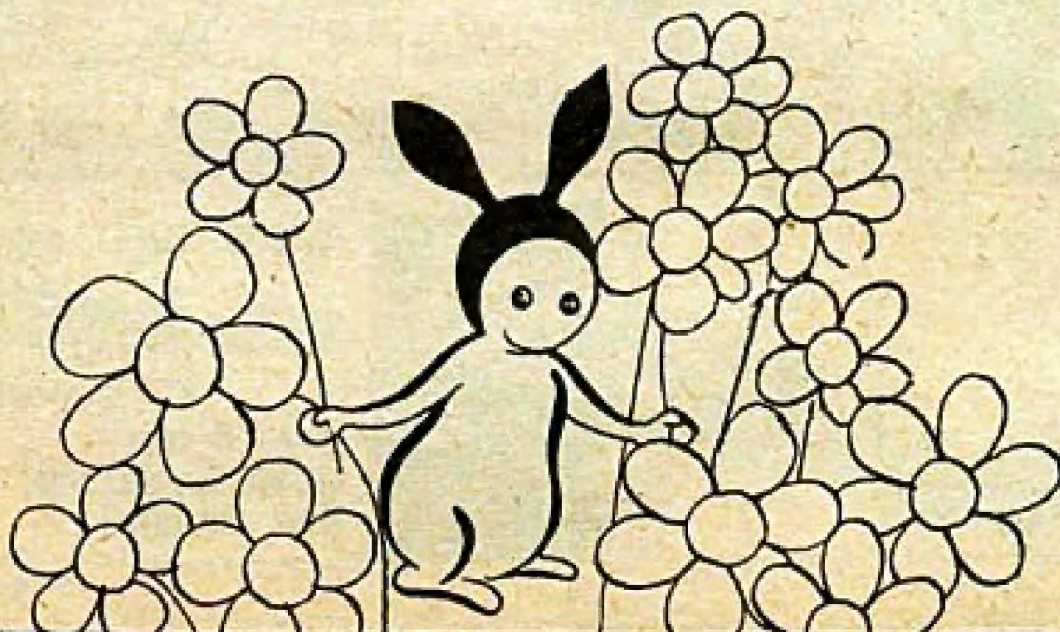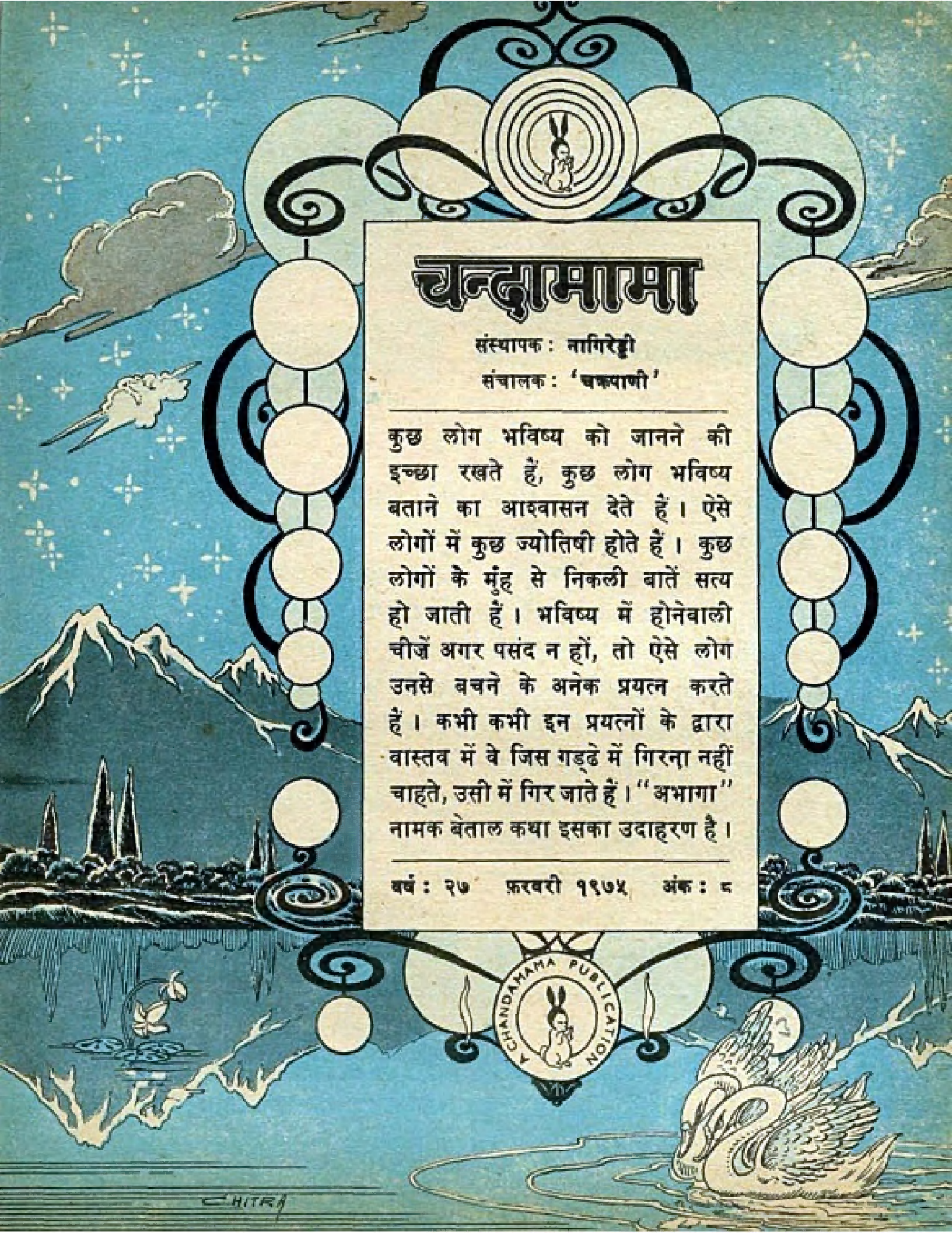
चन्दामामा
संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'
कुछ लोग भविष्य को जानने की इच्छा रखते हैं, कुछ लोग भविष्य बताने का आश्वासन देते हैं। ऐसे लोगों में कुछ ज्योतिषी होते हैं। कुछ लोगों के मुंह से निकली बातें सत्य हो जाती हैं। भविष्य में होनेवाली चीज़ें अगर पसंद न हों, तो ऐसे लोग उनसे बचने के अनेक प्रयत्न करते हैं। कभी कभी इन प्रयत्नों के द्वारा वास्तव में वे जिस गड्ढे में गिरना नहीं चाहते, उसी में गिर जाते हैं। "अभागा" नामक बेताल कथा इसका उदाहरण है।
वर्ष : २७ फ़रवरी १९७५ अंक : ८
CHANDAMAMA PUBLICATION
CHITRA
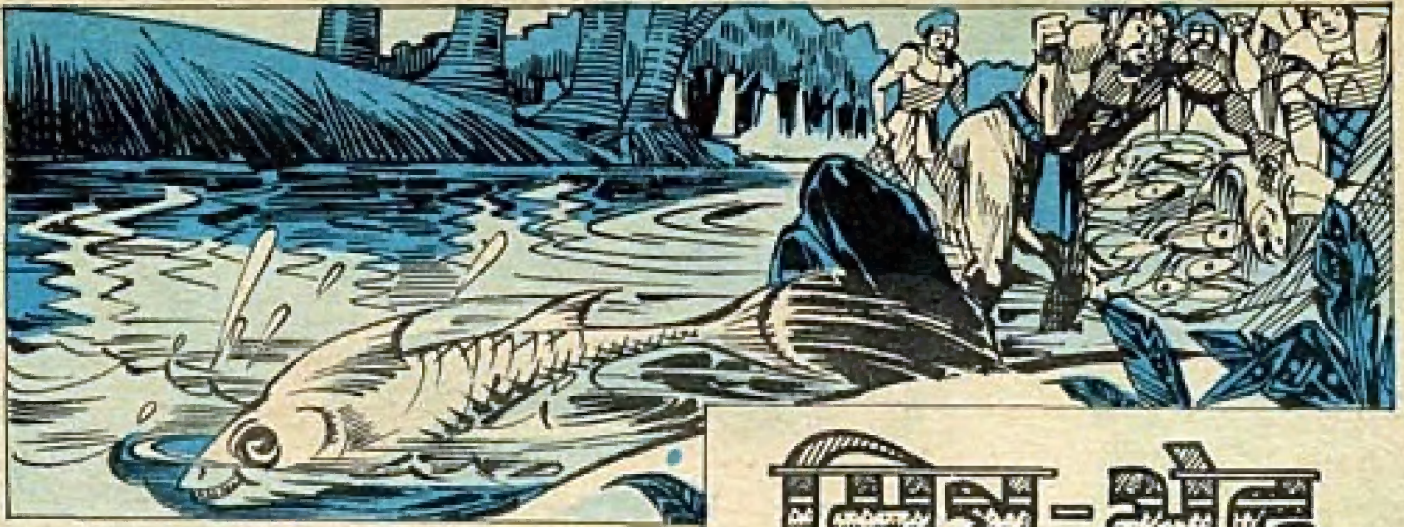
मित्र-भेद

[१९]

"दूसरे दिन मछुओं ने आकर जाल फेंके, तालाब की सभी मछलियों को पकड़ लिया। प्रत्युत्पन्नमति युक्तिपूर्वक मृत जैसी पड़ी रही। उसे देख मछुओं ने सोचा कि 'यह मछली मर गई है। इसे किनारे रखकर, बाक़ी मछलियों के मरने के बाद उनके साथ इसको भी साथ ले जाएँगे।' मछुओं ने जब उसे किनारे डाल दी, तब प्रत्युत्पन्नमति पानी में चली गई। पर यद्भविष्यति जाल में छटपटा रही थी, इस पर मछुओं ने उसको मार डाला और अपने साथ ले गये।"

अपनी पत्नी के मुंह से मछलियों की कहानी सुनकर नर टिटिहरी ने कहा—"क्या तुम समझती हो कि मैं यद्भविष्यति जैसा व्यक्ति हूँ? मैं पहले सोच-समझकर अपनी कोई युक्ति करता हूँ, तब उसे अमल करता हूँ। मेरे रहते तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं।" उसकी बातें सुनकर मादा टिटिहरी ने समुद्र के किनारे अण्डे दिये।

मादा टिटिहरी के समुद्र के किनारे अण्डे देने के पूर्व पक्षी दंपति के बीच जो वार्तालाप हुआ, उसे समुद्र ने सुन लिया। उसने सोचा—"इस नरटिटिहरी को ऐसा घमण्ड? इसे खूब सबक़ सिखाना चाहिए।"

दूसरे दिन टिटिहरी दंपति जब आहार की खोज में चला गया, तब समुद्र ने अपनी एक बड़ी लहर को भेजकर अण्डों को खींच लिया। टिटिहरियों ने लौटकर देखा, अण्डे गायब थे।

मादा पक्षी ने नर पक्षी से पूछा—"अब देखो, हमारे अण्डों की क्या हालत हो

अंतिम पृष्ठ का चित्र

गई है। तुमने यद्भविष्यति की भांति जान बूझकर हानि मोल ली। मैं अपने बच्चों को खोकर जी नहीं सकती। आग की लपटों में गिरकर मर जाऊँगी।"

"तुम जल्दबाजी में आकर ऐसा काम मत करो। मैं समुद्र को सुखाकर अपना प्रताप दिखा देता हूँ।" नर टिटिहरी ने डींग मारी।

"पतंग का लपटों के साथ लड़ने के समान होगा तुम्हारा समुद्र से लड़ना भी।" मादा पक्षी ने कहा।

"ऐसा मत कहो। मैं अपनी चोंच से समुद्र का सारा जल खींचकर केवल बालू बचने दूंगा।" नर पक्षी ने कहा।

"तुम्हारी चोंच में पानी की एक बूंद से ज्यादा न अटेगी। गंगा-सिंधु जैसी छे हज़ार नदियाँ तथा पचहत्तर हज़ार उप नदियाँ आकर हर क्षण समुद्र में गिरा करती हैं। ऐसे समुद्र को तुम कैसे सुखा दोगे?" मादा पक्षी ने समझाया।

"लगन और आत्मविश्वास के साथ हम काम में जुट जायेंगे तो असंभव कार्य कोई न होगा।" नर पक्षी ने कहा।

"तुम कम से कम अन्य सभी पक्षियों का सहयोग प्राप्त करो। एक से जो काम न होगा, वह दस लोगों के द्वारा होगा। एक रस्सा कभी हाथी को बांध नहीं

सकता। मगर सौ परतों से बटा रस्सा हाथी को आसानी से बांधकर रख सकता है। कटफोडवा, गवरैया, मेंढ़क तथा बकरी ने मिलकर क्या हाथी का वध न किया?" मादा पक्षी ने कहा।

"वह कैसी कहानी है?" नरपक्षी ने पूछा। इस पर मादा पक्षी ने यों कहा:

गवरैया–हाथी

एक जंगल में एक पेड़ की डाल पर अपना घोंसला बनाकर गवरैयों का जोड़ा निवास करता था। मादा गवरैये ने उसी समय अण्डे दिये। दूसरे दिन उस रास्ते से जाते हुए एक हाथी कड़ी दुपहरी में पेड़ की छाया में आ खड़ा हुआ। उसे

कुछ न सूझा। इसलिए उसने पेड़ की एक डाल तोड़ दी। उसी डाल पर गवरैयों का घोंसला था। उस घोंसले के सारे अण्डे नीचे गिरकर फूट गये।

अपने अण्डों के फूटने के कारण मादा गवरैया शोक में डूब गई। उसको रोते सुनकर पड़ोस में रहनेवाली उसकी दोस्त कटफोडवा आ पहुँची। मादा गवरैये के दुख का कारण जानकर समझाया–"पगली! रोने से क्या फ़ायदा? जो बात हो गई, उसके लिए बुद्धिमान लोग कभी नहीं रोते। मरे हुए लोगों के बारे में रोने से हमारी पीड़ा और अधिक हो जाती है। हम से हो सके तो उनकी मौत का बदला लेना चाहिए।"

इस पर मादा गवरैये ने कहा–"तुम्हारा कहना सच है। इस दुष्ट हाथी ने घमण्ड में आकर मेरे बच्चों के प्राण ले लिये। तुम यदि मेरी सचमुच दोस्त हो तो हाथी को मारने का कोई उपाय सोच लो।"

"सुख के समय सब मित्र बन जाते हैं, मगर दुख के वक़्त साथ देनेवाला ही सचमुच हमारा हितैषी होता है। खाना खिलानेवाला पिता होता है। हम पर विश्वास करनेवाला व्यक्ति मित्र होता है। सुख देनेवाली पत्नी होती है। मैं दिखाऊँगी कि मेरी दोस्ती कैसी है? वीणारव नामक भौंरा मेरी दोस्त है। मैं अपनी दोस्त को यहाँ बुला ले आऊँगी। हाथी को मारने का उपाय वह हमें बताएगी।" कटफोडवे ने बताया।

इसके बाद मादा गवरैये को साथ ले कटफोडवा भौंरे के पास गई, मादा गवरैये का वृत्तांत सुनाकर कहा–"तुम्हें हाथी को मारने का उपाय बताना होगा।"

"बेचारी, गवरैये को कैसा कष्ट हुआ है? मेघदूत नामक मेंढ़क मेरा अच्छा मित्र है। उससे भी सलाह लेंगे। सदा हमारे हितैषी सज्जन, राजनीतिज्ञ तथा विज्ञों के द्वारा परामर्श लेकर करनेवाले कार्य सफल हुआ करते हैं।" भौंरे ने समझाया।

विचित्र जुड़वाँ

[७]
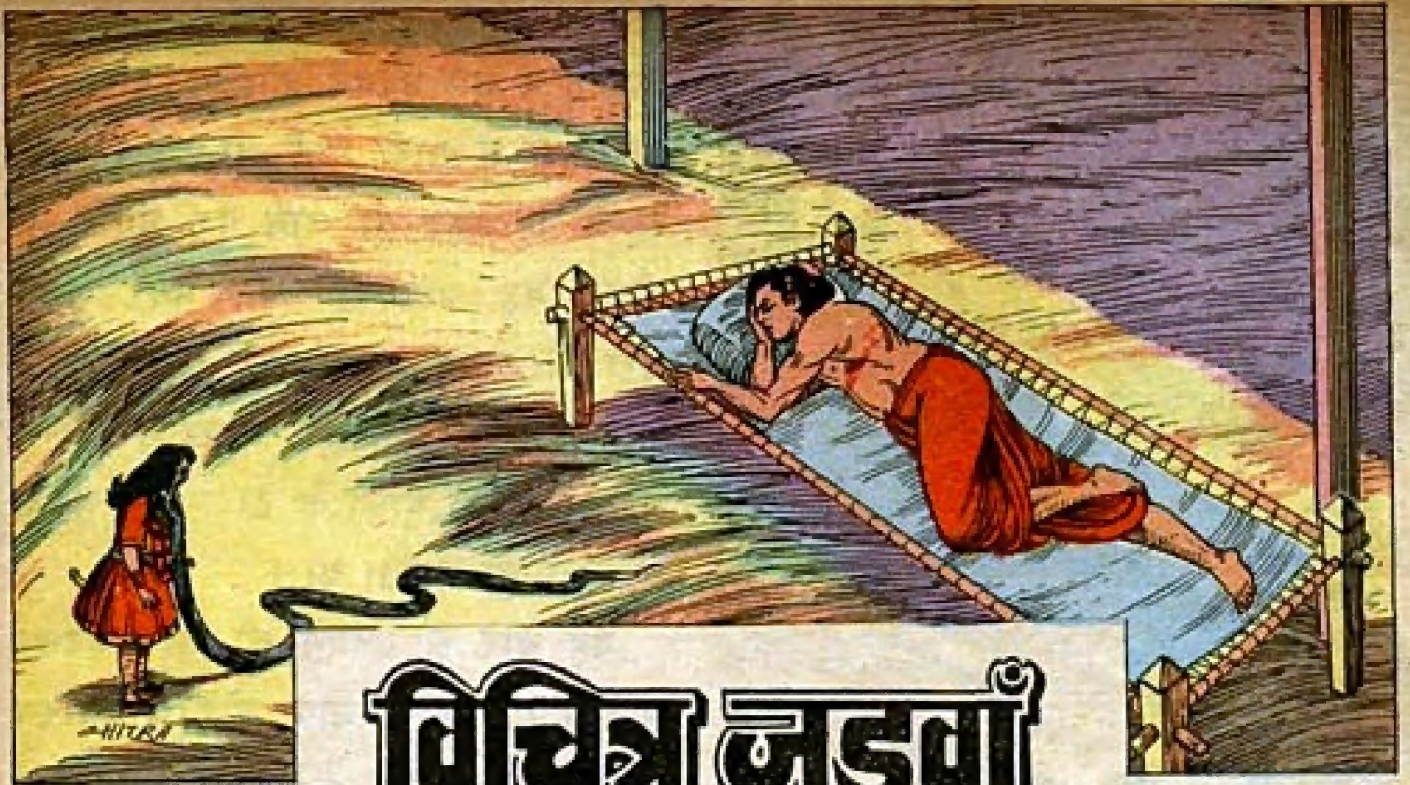
[रात के वक्त एक पेड़ पर उदयन तथा संध्याकुमार सो रहे थे। लंबी दाढ़ीवाले बित्ते भर का आदमी उन्हें बन्दी बना कर अपने घर ले गया। निशीथ अपने भाइयों की खोज में गया। दाढ़ीवाले की माला तथा उसके भस्मों का रहस्य जान लिया। बाद-]

संध्याकुमार तथा निशीथ को दिन के वक्त कुछ दिखाई नहीं देता। इसके साथ ही दाढ़ीवाले ने उन पर कोई भस्म छिड़काकर उन्हें गायब कर डाला। माया के कारण उदयन का बित्ते भर का आदमी बन जाना, खाट पर लेटा दाढ़ीवाले का साधारण आदमी बन जाना-ये सारी बातें वे जान नहीं पाये। वे यह सोचकर घबरा गये थे कि दाढ़ीवाला कब जाग पड़ेगा और न मालूम कब कौन-सा खतरा पैदा कर देगा। उल्टे अपने भाई का पता न लगने की चिंता भी उनके सर पर सवार थी। वे इतने घबराये हुए थे, बहुत दिमाग लड़ाने पर भी उन्हें कोई उपाय सूझ न रहा था।

दाढ़ीवाले का रहस्य ज्ञात होने के साथ उदयन उसको धोखा देकर वह भी उसके जैसा बन गया था, इस बात की
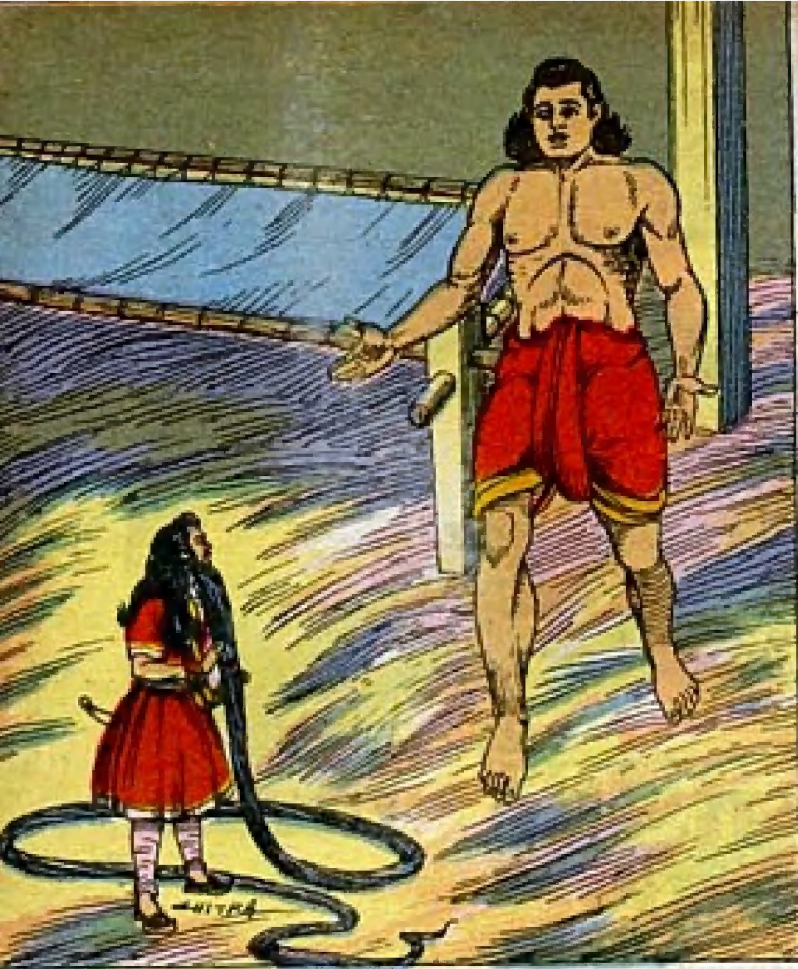
उसे बड़ी खुशी थी। इस खुशी में उदयन अपने भाइयों की बात बिलकुल भूल गया। अब उदयन की दृष्टि अपनी जेब में स्थित भस्मों पर केंद्रित थी। वह उन भस्मों तथा अंजनों के उपयोग के बारे में विचार कर ही रहा था, तभी उसे अचानक अपने भाइयों की याद आई। देखा लेकिन वे कहाँ हैं? वे कहीं दिखाई न दिये। उसका दिल धक् धक् करने लगा। उसे रोना आया। वह अपनी इस खुशी को भूल चिंता में डूब गया।

उदयन की समझ में कुछ न आया। वह इसी उधेड़बुन में टहल रहा था, तभी दाढ़ीवाले जाग उठा। सामने अपनी ही आकृति में लूले उदयन को देख दाढ़ीवाले की समझ में सारी बातें आ गईं। अपने रहस्य के प्रकट हो जाने पर भीतर ही भीतर वह जल रहा था, मगर उसने ज़रा भी अपना क्रोध प्रकट नहीं किया। क्योंकि वह बड़ा ही व्यवहार कुशल आदमी था। युक्ति के द्वारा वह अपना काम बनाना चाहता था।

वह धीरे से उदयन की ओर बढ़कर आते हुए बोला—"आप कोई असाधारण व्यक्ति मालूम होते हैं! इतने समय बाद मेरे रहस्य का पता लगा सकनेवाले समर्थ व्यक्ति को देख सकना सचमुच में अपना भाग्य समझता हूँ। लेकिन इसके द्वारा आप का कोई विशेष लाभ नहीं होने वाला है। आप बताइए कि यहाँ पर किस काम से आये हैं, मैं पल भर में उसकी पूर्ति कर देता हूँ। मेरे रहते आप को श्रम उठाने की क्या ज़रूरत है? तुम केवल अपना काम बतला दो। मैं मिनटों में उसकी पूर्ति करके तुम्हें प्रसन्न बनाऊँगा। समझें।" इन शब्दों के साथ उदयन के कंठ में स्थित माला को प्राप्त करने की याचना करने लगा।

उदयन ऐसी सरलता के साथ उसके धोखे में आनेवाला न था। उसने गंभीर हो दाढ़ीवाले से कहा—"पहले तुम यह

बताओ, मेरे भाइयों को तुमने कहाँ पर छिपा कर रखा है? बाद की बात फिर सोची जाएगी।"

"मैंने उन्हें कहीं नहीं छिपाया। वे यहीं पर हैं। लो, तुम्हारे कुर्ते की बायीं जेब में स्थित डिबिये का काला भस्म वहाँ पर छिड़क दो। बस, तुम अपने भाइयों को आप देख सकोगे।" इन शब्दों के साथ दाढ़ीवाले ने वह जगह दिखाई, जहाँ पर उन्हें गायब कर डाला था। उदयन ने उसी प्रकार काला भस्म छिड़क दिया, एक साथ निशीथ और संध्याकुमार प्रत्यक्ष हुए।

इसके बाद उदयन ने दाढ़ीवाले से पूछा—"मेरे लंगड़े हाथ को ठीक करने का उपाय भी तो बता दो। यह भी तुम जानते होगे।"

"इसकी दवा तुम्हारे पास है। तुम्हारी दायीं जेब में हरे रंग के अंजन की डिबिया है। उस अंजन को टूटे हाथ में मल दो। तुम्हारा हाथ पहले जैसा हो जाएगा।" दाढ़ीवाले ने बताया।

उदयन ने वैसा ही किया। उसका हाथ ठीक पहले जैसा हो गया।

अब उदयन के मन में यह जिज्ञासा पैदा हो गई कि उसकी जेब में स्थित सफ़ेद तथा लाल अंजन किस काम में लाये जा सकते हैं? दाढ़ीवाले को उन्हें दिखाते हुए पूछा—"बताओ, ये अंजन किस काम के हैं? इसके द्वारा क्या लाभ हो सकता है?"
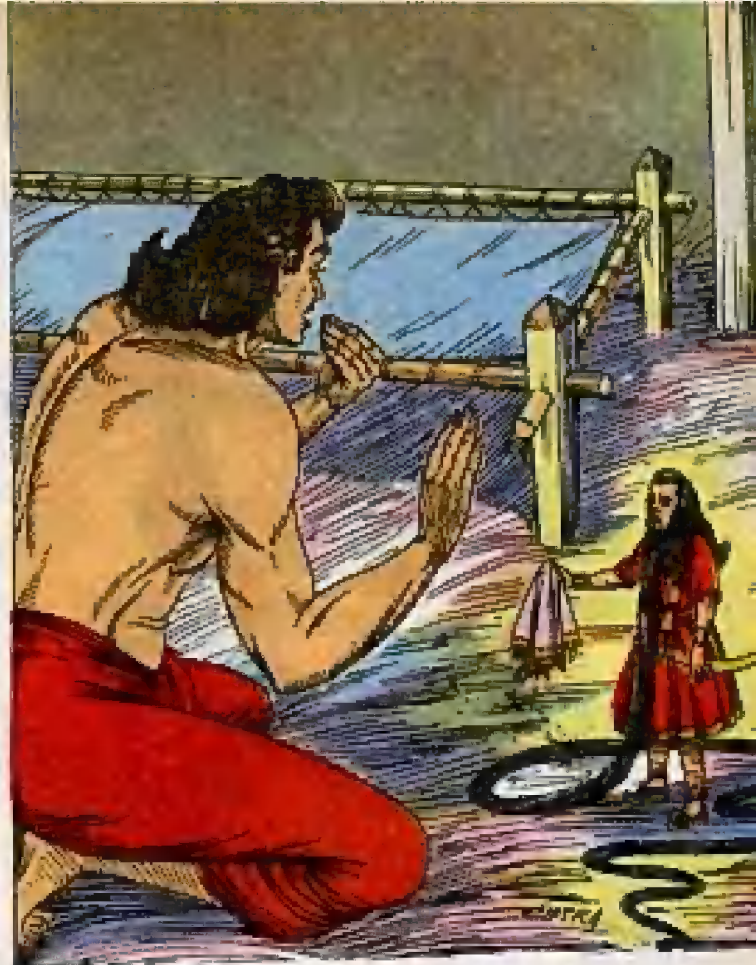
दाढ़ीवाले ने हंसते हुए बताया—"इतनी छोटी सी बात को भी तुम समझ न पाये? मैंने तुम्हारे भाइयों को इसी सफ़ेद भस्म से गायब किया था और तुम्हारे हाथ को इस लाल अंजन से।" यों उसने सारे रहस्य खोल दिये।

"तो फिर यह तौलिया किस काम का?" उदयन ने फिर पूछा।

"उसके द्वारा दो काम सिद्ध हो सकते हैं; एक तो यह है कि तुम लोग जो

खाना चाहोगे, उसका मन में स्मरण करके तौलिया बिछादोगे तो तुरंत वह खाना तुम्हारे सामने तैयार रहेगा। दूसरी चीज का उपयोग यह है कि इस से सब प्रकार की व्याधियाँ भी ठीक हो सकती हैं।" दाढ़ीवाले ने बताया।

"तो क्या हमारी आँखों की दृष्टि में जो अंतर है, उसको यह तौलिया दूर कर सकता है?" उदयन ने फिर पूछा।

"दृष्टि क्या है? अंतर कैसा?" दाढ़ीवाले ने आश्चर्य के साथ पूछा। उदयन ने सारी बातें स्पष्ट की कि वे लोग कैसे दिन, संध्या तथा निशीथ में देख नहीं पाते हैं।

सारी बातें सुनने पर दाढ़ीवाले ने कहा-"ओह, ऐसी बात है। तुम तीनों को साधारण दृष्टि प्राप्त होने का उपाय बताऊँगा, लेकिन तुम पहले मेरी माला मुझे दे दो।"

मगर उदयन जानता था कि वह थोड़ा भी असावधान रहा तो दाढ़ीवाला उन्हें जान से न छोड़ेगा। इसलिए युक्तिपूर्वक बोला-"दादाजी! हमारी सही दृष्टि प्राप्त होने का उपाय बताओ। हमारी अंतिम इच्छा यही एक है। यहाँ से पश्चिमी दिशा में दस मील की दूरी पर एक गुफा है। तुम्हारी माला को उस गुफा में रख कर हम लोग इसके बाद निश्चय ही अपने रास्ते चले जायेंगे। तुम आकर उसे ले सकते हो।"

वह माला दाढ़ीवाले के लिए प्राणों के समान थी। इसलिए उसे इस शर्त को मानना पड़ा।

इतने में निशीथ तथा संध्याकुमार उठ आये और बोले-"भैया! हम इसके चक्कर में पड़कर अब तक भूखे रह गये। हमें भूख सता रही है। देखें तो इस तौलिये का कैसा महत्व है?"

सचमुच यह विचार उदयन के दिमाग में नहीं आया। जब उसके भाइयों ने इस बात की याद दिलाई, तब उदयन ने

तरह-तरह के फलों का स्मरण करके तौलिया बिछा दिया। दूसरे ही क्षण अनेक प्रकार के फल तौलिये में भर गये। उदयन ने थोड़े फल उठाये, फिर भी तौलिये में फलों की भरमार थी। इसलिए दुष्ट होने पर भी दाढ़ीवाले को भी उसने थोड़े फल दिये।

पेट भर जाने पर उदयन ने तौलिया मोड़कर जेब में रख लिया, तब बोला–"अब हमारी दृष्टि के ठीक हो जाने का उपाय बताओ। दृष्टि पाने पर हम अपने रास्ते चले जायेंगे।"

इस पर दाढ़ीवाले ने यों बताया–"तुम्हारे पास जो लाल अंजन है, उसका ढेला बना दो। उसको इस रेशे में लपेटकर जला दो, उस में से बहुत सारा धुआँ निकलेगा। तुम तीनों तौलिया ओढ़कर उस धुएँ को अपनी आँखों पर लगने दो। पाँच मिनट धुएँ का सेवन करोगे तो तुम्हारी खोई हुई दृष्टि अपने आप लौट आएगी।"

उदयन ने वैसे ही लाल अंजन का ढेला बनाया। उस को रेशे में लपेट दिया। मगर आग कहाँ से लाया जाय! यह सवाल था।

उदयन सोच ही रहा था कि क्या करे, तभी दाढ़ीवाला दो चकमक पत्थर लाया, आग करके रेशे को जलाया। रेशे में स्थित उस ढेले के जलते ही बहुत सारा धुआँ निकला। उदयन अपने भाइयों को भी निकट बुलाकर तीनों उस धुएँ में बैठ गये और सर पर तौलिया ओढ़ लिया।
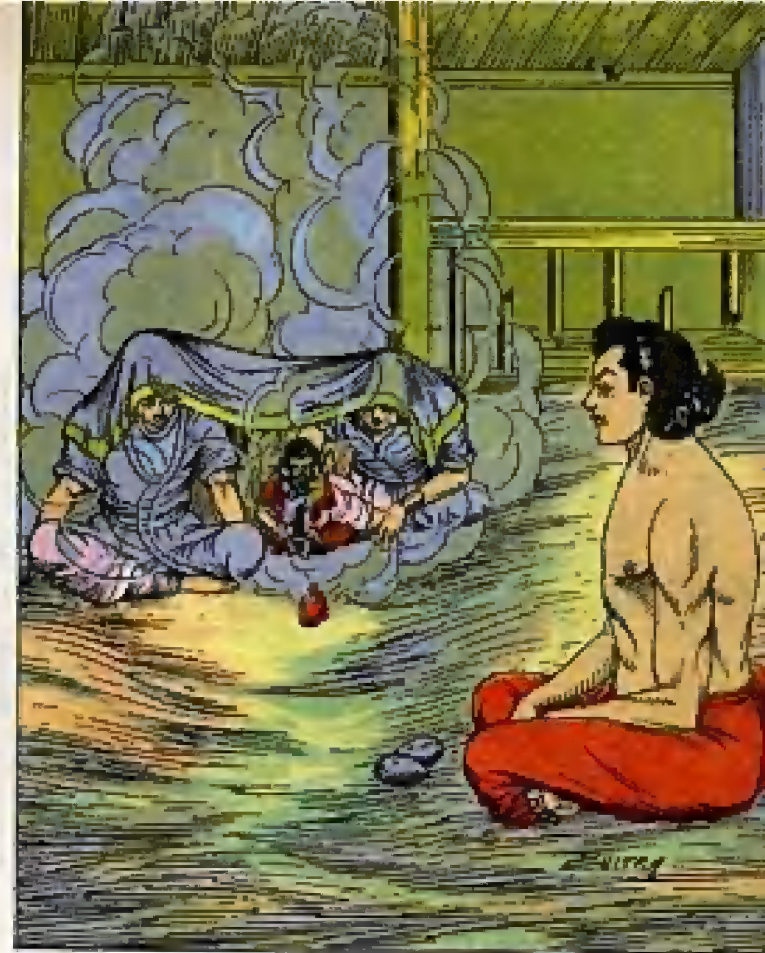
पांच मिनट बाद तीनों बाहर आये। प्रत्येक की आँखों में से पानी नहर बनकर बहने लगा। थोड़ी देर में आँखों की तरावट भी जाती रही।

मगर आश्चर्य की बात यह थी कि उन्हें दृष्टि तो नहीं लौटी, उल्टे अब आँख की पुतलियाँ तक गायब थीं।

उदयन ने क्रोध में आकर कहा–"अरे दुष्ट! तुम क्या हमें दगा दोगे?"

दृष्टि भी लौट आई। उदयन इस बात पर लज्जित हुआ कि वह अनावश्यक दाढ़ीवाले पर शक करके नाराज हो गया था। रात के वक़्त को छोड़ बाक़ी समय में दृष्टि न रखनेवाले निशीथ तथा संध्या के समय को छोड़ शेष समय में न देख सकनेवाले संध्याकुमार भी अब अच्छी तरह से देखने लगे थे। इस बात पर वे तीनों बहुत ही प्रसन्न हो उठे। दाढ़ीवाले के प्रति उनकी आँखों में कृतज्ञता का भाव प्रकट था।

इसके उपरांत वे तीनों अपने अपने घोड़े लेने चल पड़े। तीनों जंगल में गये, जहाँ अपने घोड़े बांधे थे, उस पेड़ के पास पहुँचे। उदयन ने काला भस्म वहाँ पर छिड़क दिया, पूर्ववत दोनों घोड़े प्रत्यक्ष हो गये। तब गुफा में छिपाये गये काले घोड़े के पास गये, उसे भी लेकर तीनों दाढ़ीवाले के घर लौट आये।

इस पर दाढ़ीवाले ने शांत पूर्ण स्वर में उत्तर दिया—"भाई, जल्दबाजी मत करो। तुम लोगों को धोखा देना चाहता तो क्या मैं ये सारे रहस्य तुम्हें बतला देता? अभी काम पूरा कहाँ हुआ! चिल्लाते क्यों हो? इस वक़्त तुम लोगों की पुतलियाँ तक नहीं हैं न? तुम्हारे पास जो हरा अंजन है, उसे अपनी पलकों पर मल कर देखो तो, तब पता चल जाएगा।"

उदयन ने दाढ़ीवाले के कहे अनुसार उस अंजन को अपनी पलकों पर मल दिया, फिर क्या था, उसकी आँखें पहले जैसी हो गयीं। इस पर उसने तुरंत अपने भाइयों की आँखों पर भी मल दिया। उनकी

दाढ़ीवाले ने तीनों को प्रसन्न देख पूछा—"अब तुम लोगों की सारी कामनाएँ पूरी हो गई हैं न? तुम लोग अपने रास्ते चले जाओ। लेकिन अपने दिये हुए वचन के अनुसार मेरी माला को उस गुफा में छोड़ जाओ। अपने वचन का पालन न करोगे तो फिर..." दाढ़ीवाला कुछ कहने ही जा रहा था कि निशीथ ने बात काटते हुए

कहा–"यह तो बताओ, तुम कौन हो? रास्ते चलनेवालों को तुम अनावश्यक इस प्रकार बन्दी क्यों बनाते हो?"

इस पर दाढ़ीवाले ने कहा–"मुझे इसका रहस्य प्रकट नहीं करना है। इस महान रहस्य का उद्घाटन करने पर मेरा सिर फूट जाएगा और मैं मर जाऊँगा। इसलिए तुम लोग मुझे क्षमा कर दो।"

तीनों भाइयों ने दाढ़ीवाले के प्रति एक साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की और इस रहस्य को खोल देने पर जोर नहीं दिया। इसके बाद वे अपने अपने घोड़ों पर सवार हो निकल पड़े। चलते-चलते उदयन ने दाढ़ीवाले से कहा–"सुनो, हमारी एक इच्छा और है। हम तुम्हारी माला को ज़रूर लौटायेंगे, लेकिन ये अंजन, भस्म तथा तौलिया तुम्हें लौटायेंगे नहीं।"

इसके लिए दाढ़ीवाले को मान लेना पड़ा। तब उदयन सफ़ेद घोड़े पर, काले घोड़े पर निशीथ तथा लाल घोड़े पर संध्याकुमार चल पड़े।

आखिर दाढ़ीवाले को बताई गई गुफा के पास पहुँचे। अपने वचन के अनुसार उदयन ने अपने कंठ की माला उतार कर गुफा में रख दी। उदयन ने जब अपने कंठ से माला उतारी, तब उसे अपना पूर्व रूप प्राप्त हुआ। इसके बाद वे अपने अपने घोड़ों पर सवार हो चल पड़े।

थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर वे एक घने जंगल में पहुँचे। तब तक अंधेरा होने को

था। वे सोच ही रहे थे कि रात के वक़्त उस जंगल में कहाँ पर विश्राम करें। तभी तीन सिंह उनकी ओर गरजते हुए आगे बढ़े। निशीथ तथा संध्याकुमार को कुछ न सूझा, किंतु युक्तिवान उदयन ने अपने पास का सफ़ेद भस्म निकाल कर निशीथ, संध्याकुमार तथा उनके घोड़ों पर भी छिड़का दिया। तुरंत वे गायब हो गये। अंत में अपने घोड़े तथा अपने ऊपर भी छिड़का लिया जिससे वह भी गायब हो गया।

उन तीनों का गायब हो जाना तथा तीन सिंहों का दौड़ते हुए वहाँ पर पहुँचना दोनों एक साथ हुआ। सिंह अपने लिए अच्छा आहार पाकर बड़ी आशा से कूद पड़े, मगर उन्हें बड़ी निराशा हुई। थोड़ी देर तक वहीं पर टहल कर अपने रास्ते चले गये।

मगर तीनों भाइयों ने सोचा कि सिंहों का संचार करनेवाले उस घने जंगल में रात के वक़्त साधारण मानव के रूप में रहना खतरनाक है और प्रातःकाल तक वे अदृश्य रूप में ही रह गये।

सवेरा हुआ। उदयन ने काला भस्म निकाल कर अपने घोड़े पर, अपने भाइयों तथा उनके घोड़ों पर भी छिड़का दिया। सबने अपने पूर्व रूप को प्राप्त कर लिया।

अब वे तीनों घोड़ों पर वायु वेग के साथ सवारी कर रहे थे। दाढ़ीवाले की कृपा से सबको सही दृष्टि प्राप्त हुई। इसलिए अब उनके सामने यह सवाल न था कि कौन आगे जाय और कौन पीछे। थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर एक निर्जन प्रदेश में उन्हें एक महल दिखाई दिया।

"उस महल तक कौन पहले पहुँच जाय?" इस विचार से तीनों ने अपने घोड़ों पर एड़ लगाई। उदयन का घोड़ा तीर की भांति तेजी से चला जा रहा था। उसके थोड़ी दूर पीछे संध्याकुमार और निशीथ समान वेग के साथ चले जा रहे थे, मगर विचित्र बात तो यह थी कि उदयन पलक झपने की देरी में गायब हो गया। (और है)

अभागा

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन्, तुम चाहे जो भी प्रयत्न करो, आखिर तुम्हारी क़िस्मत में जो लिखा हुआ है, वही होगा। इसके उदाहरण स्वरूप में तुम्हें धृढ़ोद्यम की कहानी सुनाता हूं। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: सिंधुनदी के तट पर ब्रह्मस्थली नामक गांव में वेदशर्मा नामक एक ब्राह्मण रहा करता था। उसके यहां एक शिष्य था। उसने वेदाध्ययन में अपार परिश्रम करके धृढ़ोद्यम नाम से यश प्राप्त किया। धृढ़ोद्यम के खाने-कपड़े वगैरह का खर्च तमोभेदक नामक एक गृहस्थ ने उठाया था। धृढ़ोद्यम भिन्नतमस नामक व्यक्ति के घर रहा

बेताल कथाएँ

करता था। इस प्रकार धृढ़ोद्यम ने अत्यंत लगन के साथ अध्ययन किया और दस वर्षों में चारों वेदों का अभ्यास किया।

एक दिन रात को भिन्नतमस ने धृढ़ोद्यम से वार्तालाप के संदर्भ में कहा— "मेरी संपत्ति के नाम यह विशाल भवन ही नहीं, बल्कि अपार गायों तथा भैंसों के झुंड, खेत, गुलाम, परिजन, दासियाँ, नारियाँ तथा रक्षक भी हैं। मैंने अपार पांडित्य प्राप्त किया, फिर भी जन्मत: मैं कृषक हूँ, इसलिए मैं अपने ज्ञान का उपयोग नहीं कर पा रहा हूँ। अब मैं वृद्ध होता जा रहा हूँ। महर्षियों के कहे अनुसार मैं अपने शेष जीवन को तीर्थयात्राओं में बिताना चाहता हूँ। मुक्ति चाहनेवाले को वाराणसी के यहाँ अविमुक्त करना होगा। मैं अपनी दास-दासियों के साथ सारी संपत्ति तुम्हें सौंप देता हूँ। तुम ले लो।"

धृढ़ोद्यम ने बड़ी प्रसन्नता के साथ मान लिया। दूसरे दिन उसने अपने गुरु तथा तमोभेदक के यहाँ विदा लेकर भिन्नतमस की संपत्ति को दान में स्वीकार करने की बात कही।

दूसरे दिन भिन्नतमस ने बड़ी देर तक प्रतीक्षा की, पर धृढ़ोद्यम न लौटा। दुपहर हो गई, तब भिन्नतमस धृढ़ोद्यम की खोज में चल पड़ा और तमोभेदक के घर के सामने उसको टहलते देखा।

भिन्नतमस को देखते ही धृढ़ोद्यम ने उत्तर दिया—"मैंने अभी तक तमोभेदक के यहाँ से विदा नहीं ली है। घर के लोग बहुत ही व्यस्त मालूम होते हैं। कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा है।"

इस पर भिन्नतमस ने हँसकर कहा— "तमोभेदक की पत्नी का प्रसव होनेवाला है। इसलिए सारे लोग बहुत व्यस्त मालूम होते हैं। तुम उस शिशु के साथ विवाह करोगे। थोड़े समय बाद उसका वंश बिगड़ जाएगा।" यों कहकर भिन्नतमस चला गया।

ये बातें सुननेपर धृढ़ोद्यम घबरा उठा। उसे लगा कि तमोभेदक के सचमुच लड़की पैदा होगी, तो उसकी बताई शेष दो बातें भी सच निकलेंगी। वह यों सोच ही रहा था, तभी तमोभेदक यह कहते घर से बाहर आया–"छी:! यह कैसी बदनसीबी है!" तमोभेदक के सचमुच लड़की पैदा हुई। इस पर धृढ़ोद्यम ने निश्चय कर लिया कि भिन्नतमस की कही हुई बातों को झूठा साबित कर उस लड़की के साथ विवाह नहीं करना चाहिए। यह निर्णय करके धृढ़ोद्यम दूसरे दिन सिंधु तट को छोड़ दस वर्ष तक अनेक देशों में पर्यटन करता रहा, आखिर गंगा तट पर पहुँचा।

एक दिन वह ब्राह्मणों के एक गाँव में पहुँचा। एक घर में एक बूढ़ी को देख पूछा–"नानी! थोड़ा पानी पिलाइए।"

वृद्धा ने पुकारा–"बेटी तमालिके, एक पीढ़ा और एक लोटे में पानी लेते आओ।"

ये शब्द सुन भीतर से एक लड़की आई। वह काले वस्त्र पहने हुए थी। तिरछी नजर से सारी दिशाओं को एक साथ देख लंगड़ाते हुए चलते एक हाथ में पीढ़ा तथा दूसरे हाथ में पानी का लोटा लिए आ पहुँची।

"बैठो।" इस शब्द के साथ उस लड़की ने पीढ़ा लगाया, उस वक्त उसके हाथ से लोटा फिसल कर नीचे गिर गया।

"बेटी, यह तुमने क्या किया? फिर लोटे भर पानी ले आओ।" वृद्धा ने कहा।

धृढ़ोद्यम आराम से पीढ़े पर बैठ गया, तब बूढ़ी ने पूछा–"बेटा! तुम किस देश से आते हो? कहाँ जाते हो?"

"मैं सारे देश घूम कर लौट रहा हूँ। मैं ब्राह्मणों के किसी गाँव को अपना स्थिर निवास बना कर बच्चों को पढ़ाते हुए अपना शेष जीवन बिताना चाहता हूँ।" धृढ़ोद्यम ने जवाब दिया।

"तब तो तुमको और कहीं जाने की जरूरत नहीं। मेरे दो पोते हैं। उन्हें पढ़ाने की सोच रही थी। उन्हें तुम्हारी

जरूरत है और तुम्हें भी उनकी जरूरत है।" वृद्धा ने कहा।

धृढ़ोद्यम ने मान लिया और उसी गाँव में रह गया। दो साल तक उन बच्चों को पढ़ाया। इस बीच बूढ़ी के मन में एक विचार आया। तमालिका भी विवाह के योग्य हो गई। उसका विवाह धृढ़ोद्यम के साथ किया जाय तो उसकी समस्या हल हो जाएगी।

धृढ़ोद्यम ने सोच-विचार कर आखिर मान लिया। उसे लगा कि कहीं पश्चिमी समुद्र के तट पर रहनेवाले तमोभेदक की बदनसीब लड़की के साथ विवाह करने से बचने के लिए इस से अच्छा कोई मार्ग न होगा। यह सोच कर उसने तमालिका के साथ विवाह किया।

एक वर्ष बीत गया। एक दिन प्रातःकाल ही तमालिका को जागते देख धृढ़ोद्यम ने पूछा-"तुम्हारे इस घर का मालिक कौन है? यह बूढ़ी तुम्हें क्या लगती है? मेरे पास पढ़ने वाले ये बच्चे कौन हैं?"

तमालिका ने गहरी सांस लेकर अपनी कहानी यों बताई: "इस बूढ़ी का पति संपन्न और दानशील था। उनके एक पुत्री थी। उसका विवाह उसके पिता ने अपने एक शिष्य के साथ किया था। शादी के पहले वह शिष्य बड़ा ही विनयशील व आज्ञाकारी था। मगर शादी के बाद वह अपने सास-ससुर के लिए एक जटिल समस्या बन बैठा। इस के बाद वह अपने साले के साथ झगड़ा करके सिंधु प्रदेश की ओर चल पड़ा। वहाँ पर ब्रह्मस्थली नामक गाँव में अपना स्थिर निवास बना लिया और वैदिक कर्म-काण्ड आदि संपन्न किया करता था।

"थोड़े दिन बाद उसके एक बदनसीब लड़की तथा यमदूत जैसे दो जुड़वें बच्चे पैदा हुए। मैं ही वह पुत्री हूँ। तुम्हारे शिष्य ये दो बच्चे मेरे छोटे भाई हैं। हम अपने माता-पिता से भी ठीक से परिचित नहीं। सिंधुनदी में भयंकर बाढ़

आई और उस प्रदेश का अधिकांश भाग जलमग्न हो गया, तब हम को अपनी नानी के यहाँ भेजा गया।"

ये बातें सुनने पर धृढ़ोद्यम के कलेजे पर पत्थर पड़ गया। भिन्नतमस की दूसरी भविष्यवाणी भी सच निकली। कम से कम इसकी तीसरी वाणी को झुठलाने के ख्याल से धृढ़ोद्यम काशी के लिए चल पड़ा; पुण्य तीर्थों का सेवन कर के जीवन-भर पुण्य कमाने का निश्चय कर लिया।

बारह वर्ष के उपरांत वह काशी पहुंच रहा था, तब एक महापाशुपत खोपड़ियों की माला धारण कर नशे में लौटते आते हुए दिखाई दिया। उसके पीछे एक कापालिनी भी शराब के नशे में मदहोश हो लोटते चली आ रही थी। उसकी आँखें अंगारों की भांति लाल थीं, उसकी दृष्टि तिरछी थी।

"कापालिनी! जल्दी चलो! अविभुक्त में धूप-दान का समय बीत न जाय। महाशिव को 'हाम्! हाम।' समर्पित कर मद्य का सेवन ककना है।" यों पाशुपत कापालिनी को जल्दी मचा रहा था।

इतने में उस नारी ने धृढ़ोद्यम को देखा, अपने पति के रूप में उसे पहचाना और चीख कर उसके चरणों पर गिर पड़ी।

भीड़ ने उन्हें घेर ली। तमालिका अपने पति की निंदा करने लगी—"तुम्हारा वेदाध्ययन क्या हो गया? तुम्हारे प्रति दिन का अग्नि होत्र किस काम का? तुम मुझे त्याग कर मेरे पतन का कारण बन गये हो!"

भीड़ में रहनेवाले ब्राह्मणों ने धृढ़ोद्यम से पूछताछ की। तमालिका के आरोप को सच पाया, तब उन लोगों ने कापालिनी से पूछा—"तुम पाशुपत के साथ रहोगी या अपने पति के साथ?" उसने अपने पति के साथ जाने की इच्छा प्रकट की।

इस पर ब्राह्मणों ने धृढ़ोद्यम को समझाया—"इसके पतन का कारण तुम हो!

इसके भ्रष्ट होने के प्रायश्चित्त का विधान हम बतायेंगे। तुम्हें इसको अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण करना ही होगा।"

धृढ़ोद्यम ने स्वीकार किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा-"राजन! धृढ़ोद्यम के ये अनुभव प्राप्त करने का कारण कौन है? क्या भाग्य का लेखा है या धृढ़ोद्यम का व्यवहार? उसने भिन्नतमस के ज्योतिष पर विश्वास किया या नहीं! इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया-"धृढ़ोद्यम ने भिन्नतमस के ज्योतिष पर विश्वास किया था, इसीलिए उसे झूठा साबित करने के लिए उसने नाना प्रकार की यातनाएँ झेलीं। यदि विश्वास न होता तो उस ज्योतिष की उपेक्षा करके अपने ढंग का जीवन बिता देता। भिन्नातमस के ज्योतिष ने भाग्य का लेखा बताया था, इसलिए हमें मानना होगा कि भाग्य का लेखा सच निकला। तमालिका के साथ यदि उसे विवाह करना नहीं था तो उसे भागने के बदले जहाँ तक हो सके उसके निकट रहना था। उसके साथ विवाह करने के एक वर्ष के बाद उसका पूरा परिचय प्राप्त करना भी उसकी भूल थी। वह पहिले ही यह परिचय प्राप्त कर सकता था। तमालिका ने सब के समक्ष यह साबित किया। परिचय पाने के बाद उसे छोड़ कर भाग जाना उसका अपराध है। पति से वंचित होने पर कोई भी स्त्री पतिता हुए बिना कैसे रह सकती है! अंत में भी उसने अपने पति के साथ रहना चाहा, इस से स्पष्ट है कि उसके मन में कोई बुरी भावना नहीं है। इसलिए हम कह सकते हैं कि यह सारी करनी धृढ़ोद्यम की स्वयं की हुई है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
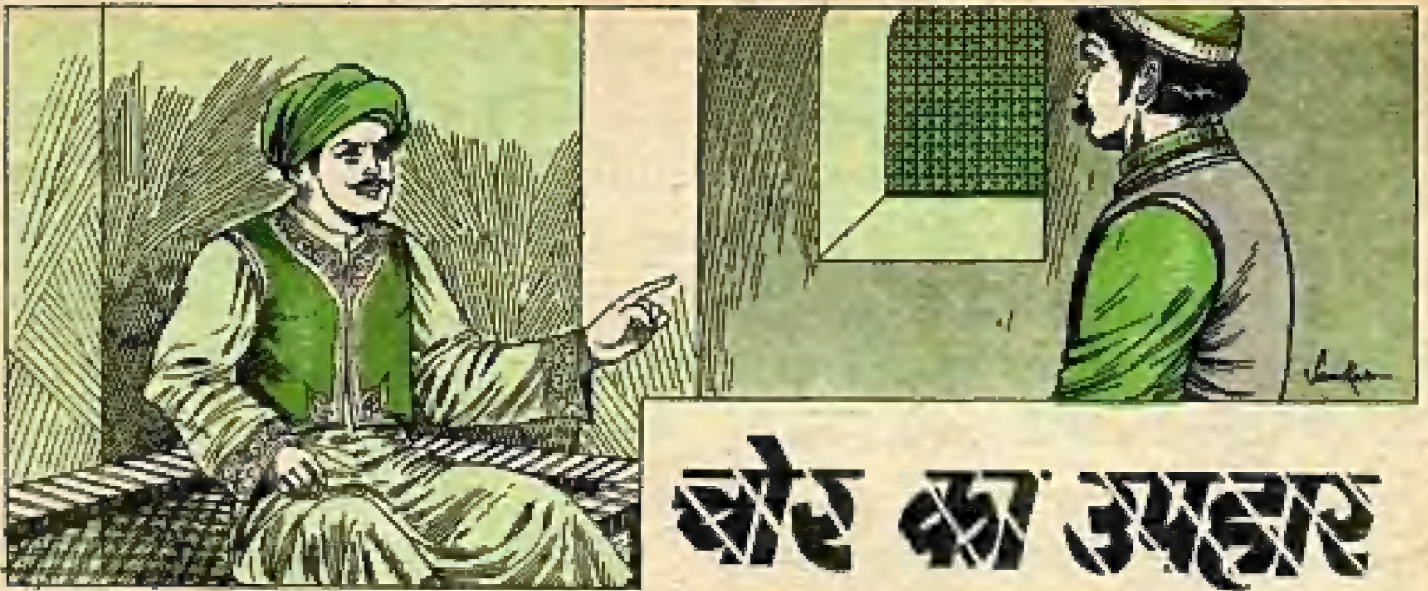
चोर का उपकार

काश्मीर में एक कुलीन पंडित था। वह जमीन्दार के परिवार का था। उसके यहाँ काफी संपति थी। मगर उसके पुरखों ने पानी की तरह पैसे बहाकर काफी संपति खर्च कर दी। इस वजह से वह पंडित निर्धन हो गया। लेकिन यह बात छिपा कर पंडित प्रकट रूप में अपने पुराने ठाठ का बड़ी युक्ति के साथ प्रदर्शन करता रहा।

उस पंडित के एक अत्यंत सुंदर लड़की थी। उसके साथ विवाह करने केलिए बड़े ही उत्साह से अनेक युवक आगे आये। मगर पंडित उस वक़्त अपनी पुत्री का विवाह करने की स्थिति में न था। यह बात भी कोई जानता न था। सब लोग यही सोचा करते थे कि पंडित के उस विशाल भवन के भूगृह में पर्याप्त निधि पड़ी हुई है।

इसी भ्रम के कारण सुंदर नामक एक व्यक्ति के साथ पंडित की शत्रुता भी हो गई। वे दोनों पहले अच्छे मित्र थे। एक बार सुंदर ने बड़ी रक़म कर्ज मांगी। पंडित ने बड़ी ही युक्ति के साथ अपनी दरिद्रता प्रकट की। मगर सुंदर ने इस बात पर विश्वास नहीं किया, बल्कि उसने अपने लिए यह अपमान की बात समझी।

पंडित से बदला लेने के उद्देश्य से सुंदर ने एक डाकू से मैत्री की और पंडित की सारी संपत्ति हड़पने की सलाह दी। डाकू ने खुशी से मान लिया। यह बात पंडित बिलकुल जानता न था।

एक दिन रात को पंडित लेट कर सो रहा था, तब उसकी पत्नी ने आकर पूछा– "लड़की तो विवाह के योग्य हो गई है। अनेक अच्छे संबंध आ रहे हैं। कोई योग्य संबंध देख विवाह क्यों नहीं करते?"

बेचारी पंडित की पत्नी भी यह न जानती थी कि उसकी सारी संपत्ति कपूर की भांति गल गई है।

"तुम्हारा कहना बिल्कुल ठीक है। पर असली बात यह है कि मेरे पास धन नहीं है। मैं इधर थोड़े समय से अपनी पुरानी प्रतिष्ठा के पीछे अपनी शक्ति से बढ़कर खर्च करता आ रहा हूँ। इस वक़्त हमारी हालत ऐसी है कि गृहस्थी चलाने के लिए भी पैसे नहीं हैं। मेरे सिर पर यही चिंता सवार है कि हमारे खाने-पीने के लिए भी पैसे कहाँ से लाऊँ? ऐसी हालत में मैं कन्या का विवाह कैसे कर सकता हूँ?" पंडित ने पत्नी से कहा।

"ओह! हमारी कैसी बुरी हालत हो गई है? इतने दिन प्रतिष्ठा का जीवन बिता कर आखिर हम कंगाल हो गये हैं। हमारा यह कैसा दुर्भाग्य है?" पंडित की पत्नी शोक में डूब गई। पंडित का दुख भी उमड़ पड़ा।

पति-पत्नी का सारा वार्तालाप डाकू ने सुना। वह पंडित का घर लूटने के विचार से उसी रात को पंडित के घर में घुस पड़ा था। उसे सुंदर पर इस बात के लिए बड़ा क्रोध आया कि उसको झूठी बातें बता कर सुंदर ने चोरी करने के लिए उकसाया है। वह पंडित तथा उसकी पत्नी के सो जाने तक ताक में बैठा रहा; तब चुपके से वहाँ से खिसक गया।

दूसरे दिन सुंदर ने डाकू की बड़ी देर तक प्रतीक्षा की। वह वापस तो न लौटा, मगर सुंदर को पता चला कि उसी के घर को किसी ने लूट लिया है। उसके घर में एक भी गहना बचा न था।

दूसरे दिन सवेरे पंडिताइन ने निद्रा से जागते ही अपने सिरहाने गहनों की एक पोटली पड़ी देखी। उसने खोल कर देखा, उस में सोने के गहने और चांदी के सिक्के भरे थे। साथ ही उस में कागज़ का एक टुकड़ा था जिस पर लिखा हुआ था–"आप की कन्या के विवाह के लिए डाकू द्वारा समर्पित एक छोटा-सा उपहार!"

व्यावहारिकता

बादशाह अकबर के दरबारी बीरबल बड़ा ही अक्लमंद था। एक दिन बादशाह ने सपना देखा कि उसके सारे दांत गिर गये हैं। दूसरे दिन अपने दरबारी ज्योतिषी को बुलवा कर पूछा कि वह इस सपने का फल बतला दे। ज्योतिषी ने अपने सारे ग्रंथ पलट कर बताया–"जहाँपनाह! आप की आँखों के सामने आप के रिश्तेदार और परिवार की मृत्यु हो जाएगी।" यह बुरी खबर सुनाने के उपलक्ष्य में बादशाह ज्योतिषी पर नाराज हो गया और उसको कारागार में भिजवा दिया।

ठीक उसी समय बीरबल दरबार में लौटा, सारा समाचार जानकर उसने भोले ज्योतिषी को कारागार से छुड़ाने का संकल्प किया। बीरबल ने बादशाह के निकट जाकर निवेदन किया–"हुजूर! मैं आप के सपने का फल बता सकता हूँ।" इन शब्दों के साथ उंगलियों की गिनती करते बीरबल ने आसमान की ओर देखकर निवेदन किया–"जहाँपनाह! आप अपने रिश्तेदार और परिवार से ज्यादा आयु रखते हैं।"

"बीरबल! तुमने बड़ी खुश खबरी सुनाई! इनाम मांग लो।" बादशाह ने कहा।

"हुजूर! आप दरबारी ज्योतिषी को कारागार से रिहा करवा दीजिए।" बीरबल ने बिनती की।

ज्योतिषी जब कारागार से रिहा होकर आया, तब बीरबल ने उसको अलग ले जाकर समझाया–"ज्योतिष बतलाना हो तो केवल शास्त्र का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। थोड़ी व्यावहारिकता भी चाहिए। व्यावहारिकता के बिना ज्योतिष का ज्ञान बेकार है।"

स्वावलंबन

एक गाँव में रामशर्मा तथा सोमगुप्त नामक दो मित्र रहा करते थे। दोनों गरीब थे। एक दिन दोनों ने चर्चा करके यह निर्णय किया कि धन का संपादन करने के लिए अपना गाँव छोड़कर कहीं चले जाय! दूसरे दिन प्रातः काल दोनों चल पड़े। बड़ी दूर की यात्रा के बाद जब दोनों काफी थक गये, तब वे एक मुनि के आश्रम के पास लुढ़क पड़े। मुनि ने उन दोनों का सारा हाल जानकर समझाया:

"बेटे! मैंने बड़े ही प्रयास के साथ अनेक विद्याएँ प्राप्त कर ली हैं। तुम में से एक ब्राह्मण है। ब्राह्मण को धन के प्रति मोह रखना उचित नहीं, उसका जन्म तभी सार्थक होगा, जब वह ज्ञान का संपादन कर अनेक लोगों में उसे बांट दे और इस प्रकार यश प्राप्त करे। दूसरे तो वैश्य है। वह मेरे यहाँ व्यापार के रहस्यों को जान कर धन का संपादन कर सकता है। सच्चा वैश्य वही होता है जो यह समझ ले कि व्यापार धनार्जन के लिए ही नहीं बल्कि जनता की सेवा करने के लिए उपयोगी होता है।"

मुनि की सलाह के अनुसार दोनों मित्रों ने तीन वर्ष तक विद्याभ्यास किया। रामशर्मा ने अनेक शास्त्रों में पांडित्य प्राप्त किया। सोमगुप्त ने व्यापार के सारे रहस्यों को जान लिया। अपने ज्ञान के बल पर रामशर्मा राजा के यहाँ दरबारी पंडित बना। सोमगुप्त ने अपने व्यापार की खूब उन्नति की। चार-पांच वर्षों में दोनों संपन्न बन गये।

अनेक वर्ष बीत गये। रामशर्मा के एक लड़का हुआ जिसका नामकरण कृष्णशर्मा किया गया। मगर रामशर्मा अपने पुत्र को लेकर चिंता में पड़ गया। वह अव्वल दर्जे

का नटखट निकला। पढ़ने में उसकी जरा भी रुचि न थी। वह हमेशा खेल-कूदों में अपना सारा समय बरबाद करता था। रामशर्मा ने इस बात की बड़ी कोशिश की कि उसका पुत्र भी उसके जैसे योग्य बने। पर उसका प्रयत्न बेकार गया।

उन्हीं दिनों में एक विचित्र घटना हुई। रामशर्मा एक दिन अपने विद्यार्थियों को कुछ श्लोक पढ़ा रहा था। वे श्लोक बड़े ही कठिन थे, इसलिए कई बार समझाने पर भी विद्यार्थी उन्हें समझ न पा रहे थे। आखिर थक कर थोड़ी देर विश्राम करने के लिए रामशर्मा घर के भीतर चला गया।

अपने पिता का विद्यार्थियों को पढ़ाने में श्रम उठाते कृष्णशर्मा भांप रहा था। अपने पिता के घर के भीतर जाते ही कृष्णशर्मा विद्यार्थियों के निकट आया और रामशर्मा के आसन पर बैठकर वह स्वयं उन्हें पढ़ाने लगा। आश्चर्य की बात यह थी कि रामशर्मा के समझाने पर जो श्लोक विद्यार्थियों की समझ में न आये, वे कृष्णशर्मा के समझाने पर बड़ी आसानी से उनकी समझ में आ गये।

भीतर से प्रवेश करते हुए रामशर्मा उस दृश्य को देख चकित रह गया। उसने सोचा कि उसका पुत्र मूर्ख नहीं है। उसे स्मरण शक्ति भी प्राप्त है। विद्याभ्यास करने पर वह बड़े-बड़े शास्त्रों का ज्ञान सरलता पूर्वक प्राप्त कर सकता है। रामशर्मा ने जब यह बात कृष्णशर्मा से कही, तब उसने पूछा-"विद्याभ्यास किस लिए करना है?"

"लोगों के द्वारा पूजा प्राप्त करने, धन कमाने के लिए भी विद्या की नितांत आवश्यकता है!" रामशर्मा ने समझाया।

"लोग मेरा आदर इस समय भी इस लिए करते हैं कि मैं एक महा पंडित का पुत्र हूँ। मैं ब्राह्मण हूं, इसलिए मेरे पूजा करते हैं। साथ ही एक धनवान का पुत्र हूँ। इसलिए मुझे अब कमाना ही क्या है?" कृष्णशर्मा ने उल्टा सवाल किया।

अपने पुत्र के मन की बात रामशर्मा ने ताड़ ली। वह इस बात पर विचार कर ही रहा था कि अपने पुत्र के मन को कैसे बदले, इतने में ही सोमगुप्त उसके घर आया। दोनों की बातचीत में यह बात प्रकट हो गई कि सोमगुप्त का पुत्र वसुगुप्त भी इसी प्रकार नटखट बन गया है और जब भी उसके पिता ने उसको सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न किया वह यही जवाब दे रहा है कि "मैं धनी का पुत्र हूँ। मुझे सतर्क रहने की क्या आवश्यकता है?"

दोनों मित्रों ने विचार करके एक योजना बनाई। उस योजना के अनुसार सोमगुप्त अपने पुत्र वसुगुप्त को रामशर्मा के घर पर छोड़ अपनी पत्नी के साथ व्यापार के काम पर नगर को छोड़ चला गया। जाते वक़्त अपने पुत्र की सेवा करने के लिए दो नौकरों को भी छोड़ गया।

कृष्णशर्मा और वसुगुप्त के बीच धीरे धीरे गहरी मित्रता हो गई।

दो मास बीत गये। रामशर्मा ने एक दिन वसुगुप्त को बुलाकर कहा-"तुम्हारे पिता ने धन की मांग करते खबर भेजी है। तुम अपना मकान बेचकर उन्हें धन भिजवा दो।" पर वसुगुप्त ने कोई ध्यान न दिया।

एक महीना और बीत गया। एक दिन रामशर्मा के यहाँ एक व्यक्ति ने आकर समाचार दिया-"सोमगुप्त का जहाज़ डूब गया है। उसके साथ सोमगुप्त, उनकी पत्नी और उनकी सारी संपत्ति भी डूब गई है। मैं उन्हें बड़ी मुश्किल से किनारे पर ले आया और अपने घर पहुँचा दिया, मगर दुर्भाग्य से वे जीवित नहीं रह सके।"

यह समाचार सुनते ही वसुगुप्त रो पड़ा। रामशर्मा ने उसे सांत्वना दी। मगर उसने एक बात स्पष्ट कह दी-"मैं तुम्हारे पिता की तरह कोई बड़ा व्यापारी नहीं हूँ। तुम्हारा भार उठाना मेरे लिए

संभव नहीं है। इसलिए तुम अपनी जिम्मेदारी आप ही संभाल लो।"

वसुगुप्त रोष में आकर रामशर्मा के घर से चल पड़ा। मगर उसे ठहरने के लिए कहीं जगह न मिली। किसी ने खाना तक नहीं खिलाया। इसलिए वह अपने आत्माभिमान को तिलांजली देकर रामशर्मा के घर लौट आया और खाना खिलाने की प्रार्थना की।

रामशर्मा ने वसुगुप्त को खाना खिलाया, साथ ही यह भी बताया कि यह क्रम ज्यादा दिन तक नहीं चलने का।

यह बात सुनने पर कृष्णशर्मा को बड़ा क्रोध आया। उसने अपने पिता से पूछा– "क्या आप अपने मित्र के पुत्र की इतनी भी सहायता नहीं कर सकेंगे?"

इसके उत्तर में रामशर्मा ने यों कहा– "सोमगुप्त मेरे मित्र हैं। अगर वे कठिनाइयों में होते तो मैं अवश्य उनकी मदद करता। लेकिन वसुगुप्त के साथ मेरा कोई संबंध नहीं है।"

"वसुगुप्त आप के लिए कुछ नहीं हो सकता, मगर वह मेरा मित्र है। क्या मेरे मित्र को इस घर में आदर नहीं मिल सकता?" कृष्णशर्मा ने पूछा।

"तुम्हारा बड़प्पन क्या है?" रामशर्मा ने लापरवाही से पूछा।

"भगवान की अर्चना करने मात्र से पुजारी का भगवान के समान लोग आदर देते हैं। मैं महापंडित रामशर्मा का पुत्र हूँ। क्या यह मेरे लिए बड़प्पन की बात नहीं हो सकती?" कृष्णशर्मा ने फिर पूछा।

रामशर्मा ने पल भर सोचकर कहा– "मैं तुम्हारे सवाल का जरूर जवाब दूंगा, लेकिन इसके पहले तुम्हें एक काम करना होगा। तुम्हारी तथा वसुगुप्त की सेवा करनेवाले नौकरों को बुलवा कर उनके द्वारा दो दिन तक वसुगुप्त की सेवा करवा दो। फिर मुझ से मिलो।"

कृष्णशर्मा अत्यंत उत्साह पूर्वक वहाँ से चला गया। इसके पूर्व वे लोग पैसे की

मांग किये बिना समस्त प्रकार की सेवाएँ करते थे। लेकिन अब वसुगुप्त के प्रति उलाहना भरी बातें कहीं और यहां तक बताया कि ऐसे दरिद्र की सेवाएँ हम आइंदा न करेंगे।

उनका उत्तर सुनकर कृष्णशर्मा चकित रह गया और अपने पिता के पास लौटकर सारा वृत्तांत उसे सुनाया।

रामशर्मा ने मंदहास करते हुए कहा– "नौकरों ने सही उत्तर दिया है। वसुगुप्त का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है। जब तक वह अपने पिता के साये में पला, तब तक उसके पिता का धन उसका रक्षक था। उस धन के समाप्त होते ही वह भी एक साधारण व्यक्ति बन गया है। कल तुम्हारी भी यही हालत होगी। तुम मेरे पांडित्य के द्वारा आदर प्राप्त कर रहे हो! मेरी संपत्ति केवल पांडित्य है। वह संपत्ति अगर तुम्हें प्राप्त न हुई, तो तुम्हारी भी यही हालत होगी। स्वावलंबन के द्वारा जो कुछ संपादन किया जाता है, वही शाश्वत होता है। जो व्यापार के रहस्य नहीं जानता, वह वैश्य नहीं होता। जो विद्या नहीं जानता, वह ब्राह्मण नहीं है।"

"स्वावलंबन आवश्यक है। इसलिए आप अपने मित्र की जो सहायता कर सकते हैं, वह मैं अपने मित्र की सहायता नहीं कर पाता हूँ।" कृष्णशर्मा ने कहा।

"तुम और तुम्हारे मित्र मेरे बताये स्थान पर जाकर कुछ वर्ष विद्याभ्यास करो।" यों समझाकर रामशर्मा ने अपने विद्याभ्यास का परिचय देकर उस मुनि के आश्रम का सारा परिचय दिया।

कृष्णशर्मा तथा वसुगुप्त दो वर्ष तक मुनि के आश्रम में विद्याभ्यास करके लौट आये। वसुगुप्त का पिता न केवल जीवित था, बल्कि उसने अपनी जायदाद दुगुनी कर दी थी। आखिर उन दोनों ने जान लिया कि रामशर्मा तथा सोमगुप्त ने मिलकर यह नाटक रचा है।
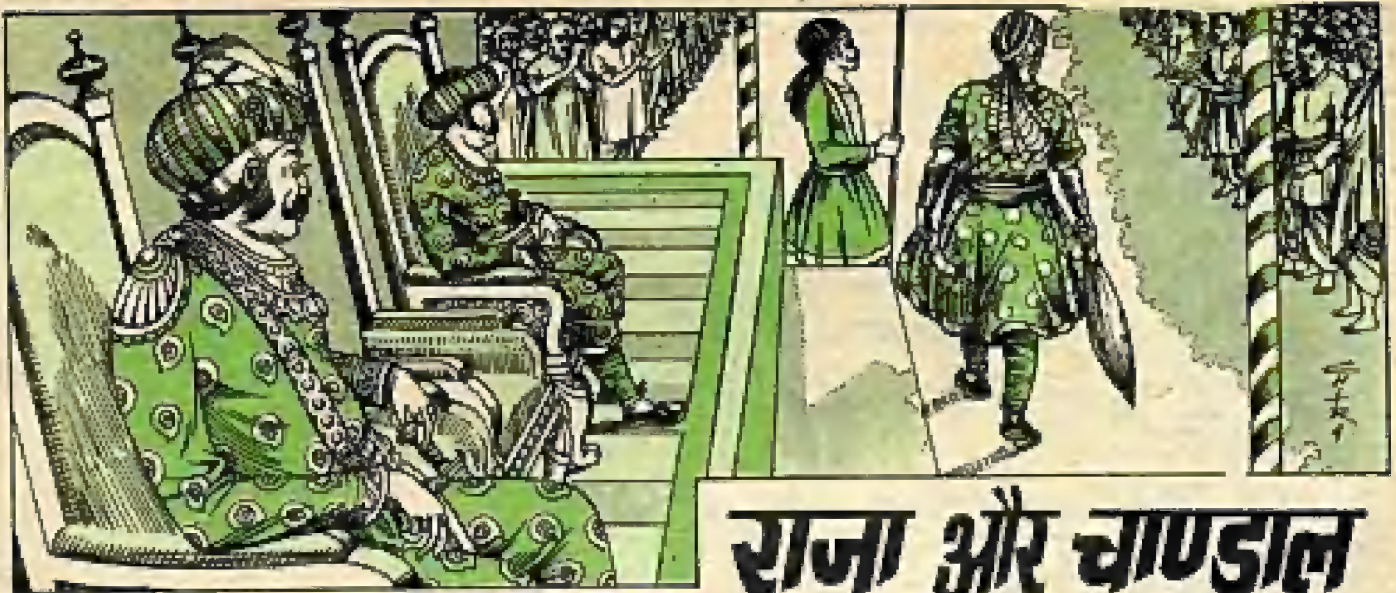
राजा और चाण्डाल

प्राचीनकाल में उत्कल देश पर राजा पुरुषोत्तम शासन करता था। वह भगवान जगन्नाथ का परम भक्त था। उसका विश्वास था कि उसका राज्य भगवान जगन्नाथ का है और वह उनके सेवक के रूप में शासन का कार्य संभाल रहा है।

पुरी नगर में प्रति वर्ष आषाढ़ महीने में रथ यात्रा का उत्सव मनाया जाता था। उस उत्सव में भाग लेने के लिए हज़ारों की संख्या में लोग आते थे। रथ यात्रा में भाग लेनेवाले तीन रथों के नीचे राजा स्वयं झाडू देता था। इसके बाद ही लोग रथ खींचा करते थे।

राजा पुरुषोत्तम एक बार दक्षिणी दिग्विजय पर गया। उस समय उसने कांचीपुरम की राजकुमारी पद्मावती को देखा। वह असाधारण सौंदर्यवती थी। उसको देखते ही राजा उस पर मोहित हो गया और उसके साथ विवाह करने का निश्चय किया। यह समाचार दूत के द्वारा पाकर पद्मावती के पिता ने अपनी स्वीकृति दी। पुरुषोत्तम का निमंत्रण पाकर कांचीपुरम का राजा उत्कल गया और रथोत्सव को भी देखना चाहा।

रथोत्सव के दिन मंदिर से उद्यान तक फैला राजपथ लोगों से भर गया। शंख बज रहे थे। जनता कोलाहल कर रही थी। मंदिर से जगन्नाथ, भलभद्र तथा सुभद्र की मूर्तियों को लाकर तीन रथों पर रखा गया।

उस समय तक कांचीपुरम के राजा के साथ वार्तालाप करनेवाला राजा पुरुषोत्तम उठकर चला गया और रथों के नीचे झाडू देने लगा। जनता ने हर्षनाद किये। रथ चल पड़े।

सुशीला राय

राजा पुरुषोत्तम के द्वारा झाड़ू देते देख कांचीपुरम के राजा के मन में जुगुप्सा पैदा हो गई । रथ यात्रा के समाप्त होते ही कांचीपुरम का राजा अपने देश को लौट गया और राजा पुरुषोत्तम के यहाँ यह समाचार भेजा–"मैं अपनी पुत्री का विवाह एक चाण्डाल के साथ नहीं करूँगा ।"

यह समाचार पाकर राजा पुरुषोत्तम क्रोध में आया । उसने कांचीनगर पर आक्रमण किया । उस युद्ध में राजा पुरुषोत्तम विजयी हुआ । राजकुमारी पद्मावती उसकी बंदी बनी । लेकिन राजा पुरुषोत्तम के मन में इस वक़्त पद्मावती के साथ विवाह करने की कामना न थी । उसने अपने मंत्री को बुलाकर आदेश दिया–"इसके पिता ने मुझे चाण्डाल बताया है, इसलिए इसका विवाह एक झाड़ू देनेवाले व्यक्ति के साथ कीजिए ।"

"जी, महाराज! आपके आदेश का पालन किया जाएगा ।" मंत्री ने कहा ।

मगर दयालू मंत्री ने राजकुमारी पद्मावती को अपनी निजीकन्या की भांति मानते हुए गुप्त रूप से अपने घर पर ही रख लिया ।

कुछ महीने बाद फिर रथोत्सव का दिन आया । राजा अपने रिवाज के अनुसार झाड़ू लेकर रथों के नीचे झाड़ू दे रहा था ।

उस वक़्त मंत्री पद्मावती को वहाँ पर ले गया और बोला–"महाराज! आपके आदेश का पालन करने में विलंब हो गया है । इसलिए क्षमा कीजिए । इस कन्या के लिए झाड़ू देनेवाले पति आप से बढ़कर योग्य व्यक्ति न मिला । इसलिए कृपया आप ही इसके साथ विवाह कीजिए ।"

तब तक राजा पुरुषोत्तम का क्रोध शांत हो गया था । अपने मंत्री की युक्ति पर राजा प्रसन्न हुआ और अत्यंत वैभवपूर्वक पद्मावती के साथ विवाह किया ।

उनकी संतान आज भी रथोत्सव के दिन झाड़ू लेकर मंदिर साफ़ करती है ।

धूर्त राजकुमारी

एक व्यापारी का पुत्र रामपाल जंगल में रास्ता भटककर सात दिन तक परेशान था और आखिर अपनी जान की आशा छोड़ दी। उस वक्त उसे एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। एक अजगर एक हिरण शावक की पिछली टाँग पकड़ कर उसको निगलने के प्रयत्न में था।

उस पर रहम खाकर रामपाल ने एक युक्ति के साथ अजगर के मुँह से हिरण शावक को बचाया। अजगर के शरीर पर एक डाल झुकी हुई थी। रामपाल ने उस डाल को इस तरह काट दिया जिससे वह डाल अजगर के शरीर पर गिर पड़े। डाल के गिरने से उसके बोझ के कारण अजगर का शरीर कुचल गया। उस पीड़ा की वजह से अजगर ने अपने मुँह खोल दिया और हिरण शावक को छोड़ दिया।

हिरण शावक ने रामपाल की ओर कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि दौड़ाई और इतमीनान से आगे बढ़ा। मगर वह थोड़ी ही दूर जाकर वापस लौट आया। हिरण शावक के बार-बार इस प्रकार करते देख रामपाल ने सोचा कि वह बिना साथ के आगे बढ़ना नहीं चाहता है और वह भी उसके पीछे चल पड़ा।

हिरण शावक रामपाल को उस जगह ले गया जहाँ फलों के पेड़ थे। पास में ही एक झरना बह रहा था। रामपाल ने भर पेट फल खाये, जल पिया, तब लेटकर सो गया।

रामपाल ने विश्राम के बाद उठकर देखा, हिरण-शावक उसके निकट खड़ा हुआ है। रामपाल को बैठते देख हिरण शावक फिर चलने लगा। रामपाल भी उसके पीछे हो लिया। जल्द ही वे दोनों

जंगल को पारकर एक देश की सीमा पर पहुँचे। उसके पास ही क़िले की दीवार थी। तब हिरण शावक कहीं चला गया।

तब तक अंधेरा हो चला था। रामपाल ने सोचा कि कहाँ पर विश्राम किया जाय, तब उसने जान लिया कि वह जहाँ पर खड़ा हुआ है, वह एक श्मशान है। उसने वह रात पेड़ पर बितानी चाही और पेड़ पर चढ़कर बैठ गया। इसके दूसरे ही क्षण उसे एक भयंकर दृश्य दिखाई दिया। उसके सारे रोंगटे खड़े हो गये। क्योंकि नये नये गाड़े गये एक गड्ढे में से एक मनुष्य की लाश ऊपर उठने लगी। रामपाल चीखकर काँपने लगा।

"तुम डरो मत! मैं कोई भूत-प्रेत नहीं हूँ; बल्कि तुम जैसा एक मानव हूँ। मैं अपनी बदनसीबी की कहानी सुनाता हूँ, सुनो।" उस व्यक्ति ने कहा।

रामपाल ने हिम्मत बटोर ली। पेड़ से उतर आया और पूछा—"इस अनर्थ का कारण क्या है?"

"मेरी कहानी सुनोगे तो सारी बातें तुम्हारी समझ में आ जाएँगी।" इन शब्दों के साथ उस व्यक्ति ने अपनी कहानी यों सुनाई:

"मैं एक राजकुमार हूँ। युवावस्था में प्रवेश करते ही मैं अपने देश को छोड़ घोड़े पर पर्यटन के लिए चल पड़ा। अपनी इस यात्रा में मैंने अनेक नगर, शहर और राज्य भी देखे। मुझे मालूम हुआ कि कोई अत्यंत ही विचित्र देश है और उस देश की राजकुमारी असाधारण सुंदरी है। उसने यह घोषणा की है कि उसके द्वारा ली जानेवाली एक स्पर्धा में विजयी होनेवाले के साथ वह विवाह करेगी और उसको अपने देश का राजा बनाएगी। मैंने उसके चित्र को देखा। निश्चय ही वह अद्भुत सौंदर्यवती थी। मैं अपने मन पर नियंत्रण न कर सका

और उस देश की खोज में चल पड़ा। राजकुमारी ने हृदयपूर्वक मेरा स्वागत किया। मैं उसके सौंदर्य को देख आश्चर्य चकित रह गया।

"स्पर्धा में भाग लेने के लिए मेरी एक शर्त है। तुम स्पर्धा में हार जाओगे तो आजीवन तुम्हें मेरा नौकर बनकर रहना होगा! क्या यह शर्त तुम्हें स्वीकार है?" राजकुमारी ने मुझसे पूछा।

"मैं उसकी साधुता पर मुग्ध हो गया और मैं उस शर्त को मान गया। राजकुमारी ने मुझको एक खाली पात्र दिखाया। उसने एक थैली में से दो छोटी पेटियाँ निकालीं। वे पेटियाँ इतनी छोटी थीं जो उसकी हथेलियों में अट सकती थीं। उसने उन पेटियों को खाली पात्र के बाजू में रखा। दायें हाथ में एक पेटी को लेकर हिलाया। हिलाने पर उस पेटी में से कोई आवाज़ न निकली। इससे मुझे मालूम हुआ कि उस पेटी के भीतर कोई चीज़ नहीं है। उस पेटी को राजकुमारी ने पात्र में रखा और बायें हाथ से दूसरी पेटी निकाली। जब उसने दूसरी पेटी हिलाई तब उसमें से कोई ध्वनि निकली। राजकुमारी ने दूसरी पेटी को भी पात्र में रखा और मेरी तरफ़ मुड़कर कहा-"हे युवक! देखो, इस पात्र में दो पेटियाँ हैं। उनमें से एक में एक सिक्का है। सिक्केवाली पेटी को तुम निकाल सकोगे तो मैं और मेरा राज्य तुम्हारा हो जाएगा।"

बीमार हूँ और उसे एक बार देखना चाहता हूँ। वह बड़ी मेहर्बानी के साथ मुझको देखने आई और पूछा–"हे युवक! तुम्हें क्या हो गया है?"

"महारानी! दयामयी! आप आ गईं? मैं कृतज्ञ हूँ। मरने जा रहा हूँ। मैं राजवंश में पैदा हुआ व्यक्ति हूँ। हमारी प्रथा के अनुसार कृपया मेरी लाश को दफनवा दीजिए। उसका दहन-संस्कार न कराइए। मेरी मृत्यु के बाद मुझको गुलामी से मुक्त करके नगर के बाहर दफनवा दीजिए।"

"अच्छी बात है! मैं ऐसा ही कराऊँगी! तुम तृप्त हो गये हो न!" राजकुमारी ने कहा। मैंने उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।
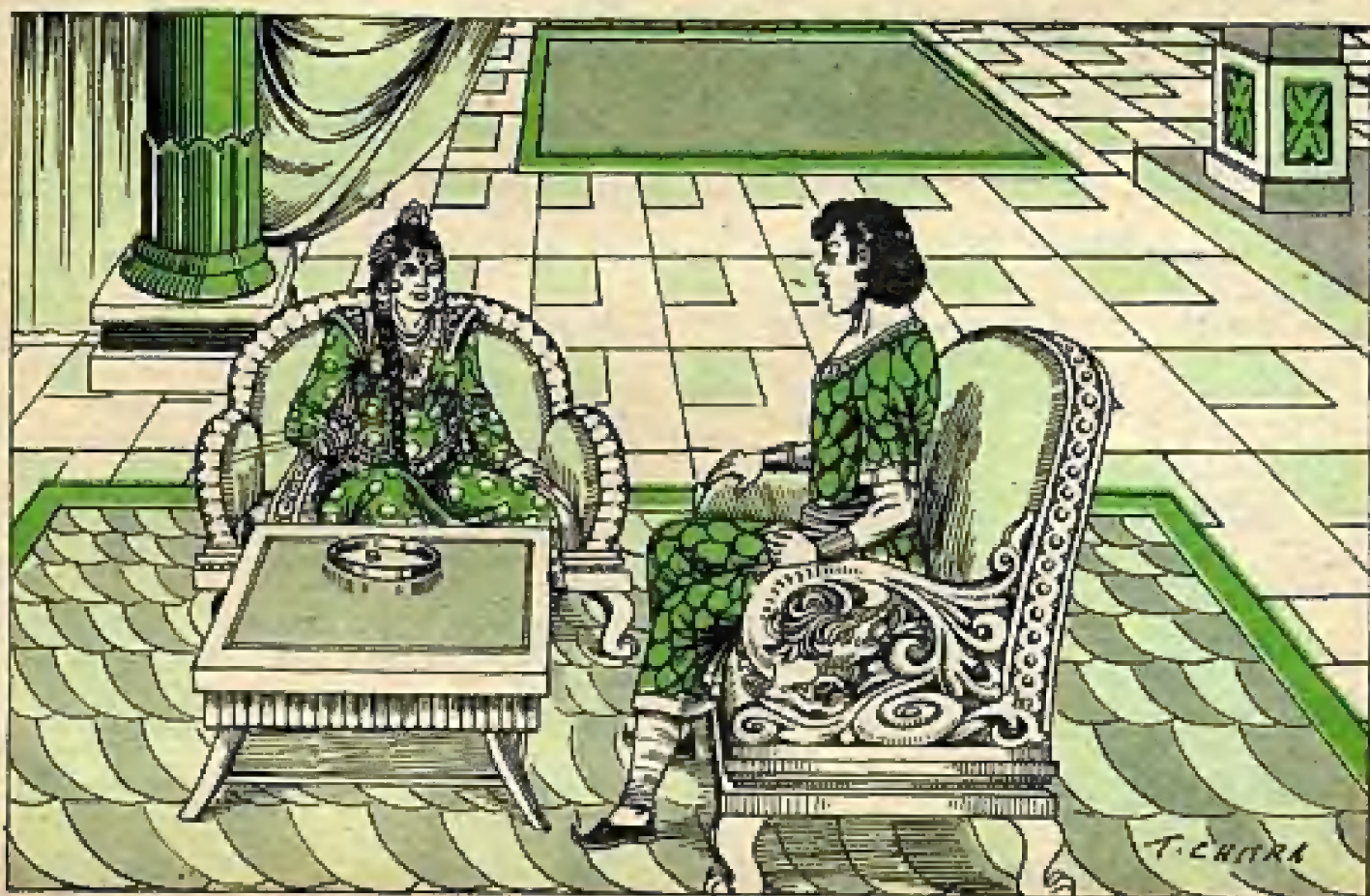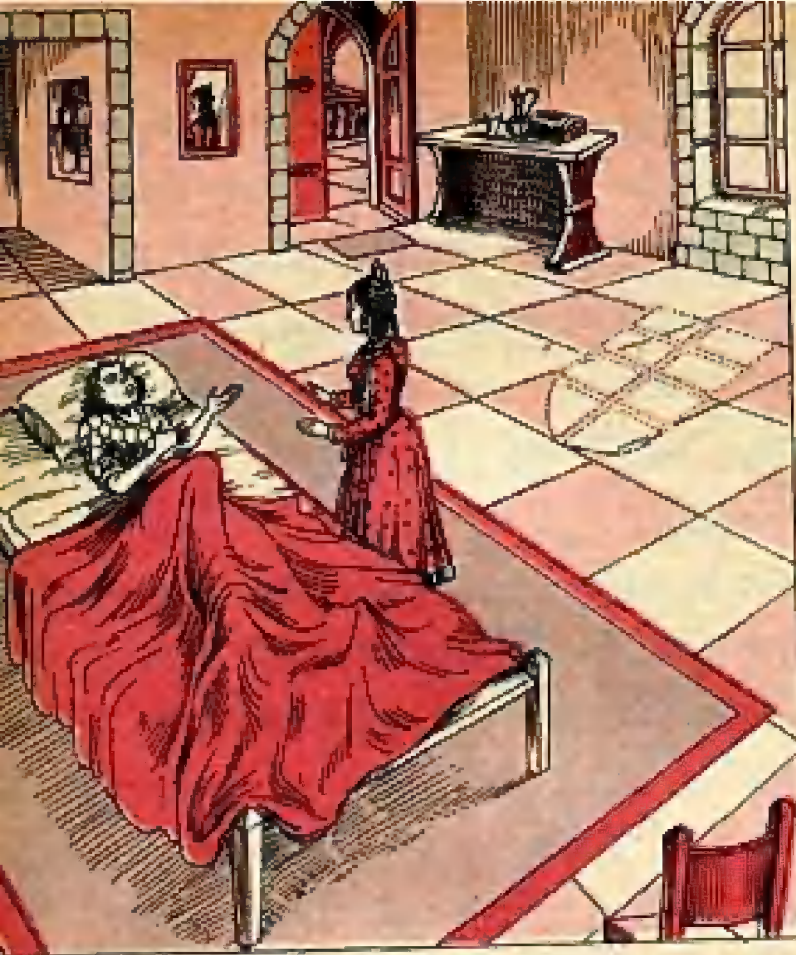
"मैं इस परीक्षा में असफल रहा। एक पेटी को निकालकर हिलाया, मगर उसमें से कोई आवाज न निकली। उसने अपने बायें हाथ से दूसरी पेटी को निकाल कर हिलाया, उसमें से ध्वनि आई। मैं उसका गुलाम बन गया। मेरे जैसे स्पर्धा में हारकर राजकुमारी के गुलाम हुए अनेक लोगों में से मैं भी एक हूँ।"

"दिन बीतते जा रहे थे। मैं बचकर भागने का उपाय सोच रहा था। राजकुमारी की ठीक से सेवाएँ करके मैं उसका विश्वासपात्र बना। एक दिन मैंने राजकुमारी के पास खबर भेजी कि मैं

मेरी इस कहानी को बड़ी रुचि के साथ सुननेवाले रामपाल ने बीच ही में मुझे टोककर पूछा–"तुमने अपना नाम नहीं बताया। मेरा नाम रामपाल है! तुम अपना नाम बता दो।"

"मेरा नाम सागरकुमार है।" इन शब्दों के साथ उसने अपनी कहानी यों सुनाई:

"हमारे दरबार में जहर का एक विशेषज्ञ था। हमारे देश में सांप के डसने से अनेक लोगों की मृत्यु हुआ करती थी।

इसलिए मेरे पिता ने उसको दरबार में रख लिया। उसने एक बार मुझे एक जड़ीबूटी दिखाकर बताया कि उसके फलों को भोजन के साथ चबाने से कोई भी व्यक्ति दो दिन तक लाश जैसे निश्चल पड़ा रहेगा। अचानक मुझे रानी के उद्यानवन में वह पौधा दिखाई दिया। उसका एक फल तोड़कर इतवार के सुबह खाने के साथ खा लिया। हाँ, यह बताओ, आज कौन-सा वार है?"

"शायद आज सोमवार है।" रामपाल ने उत्तर दिया।

"फिर क्या, समझ लो कि मेरे प्राण लौट आये हैं, दोस्त! अब तुम अपनी कहानी सुनाओ।" सागरकुमार ने पूछा। रामपाल ने अपना वृत्तांत संक्षेप में सुनाया।

सागरकुमार की बातों से रामपाल ने भांप लिया कि राजकुमारी अपने साथ विवाह करने आनेवालों को जादू की युक्ति के द्वारा दगा दे रही है।

रामपाल का एक मित्र जादू की विद्या में प्रवीण था। उससे रामपाल ने जादू की कई सरल विद्याएँ सीख ली थीं। इसलिए उसने राजकुमारी के द्वारा प्रयोग की गई युक्ति को समझ लिया और उसी जादू के द्वारा राजकुमारी को हराना चाहा।

रामपाल ने अपना विचार बताया, इस पर सागरकुमार ने समझाया—"तुम अगर

अपनी युक्ति के द्वारा राजकुमारी को हराओगे, फिर भी राजकुमारी सहृदयता के साथ अपनी हार को स्वीकार करेगी, इसकी क्या गैरंटी है? हारकर भी यदि वह तुमको कारागार में भेज दे तो?"

"तब तुम अपने पिता की सेनाओं को लाकर मुझको कारागार से मुक्त करो! हे मित्र! क्या मेरी इतनी सहायता न करोगे?" रामपाल ने पूछा।

"मैं तुम्हें वचन देता हूँ। मैं अपना वेष बदलकर नगर में रहूँगा और आवश्यक सारा प्रबंध करूँगा। मेरे पिता का राज्य भी समीप में ही है।" सागरकुमार ने जवाब दिया।

दूसरे दिन नगर के द्वार खुलते ही रामपाल तथा सागरकुमार ने नगर में प्रवेश किया। सागरकुमार ने अपने केश मुंडवाये, रामपाल के पास जो अतिरिक्त वस्त्र थे, उन्हें धारणकर अपने रूप को बदल लिया।

एक खिलौनों की दूकान में रामपाल ने सागरकुमार के सुझाव पर एक छोटी-सी पेटी खरीदी। उसमें एक सिक्का डालकर उसे अपने बायें हाथ की कलई में थोड़ी ऊँचाई पर बांध लिया। तब अपने कुर्ते के हाथ को उस पर खींच लिया। इस समय वह यदि अपना बायाँ हाथ हिलाएगा तो ध्वनि होगी।

इस प्रकार तैयार हो रामपाल राजकुमारी के पास पहुँचा और उसके साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की।

"मुझको जीतना चाहते हो तो मेरी परीक्षा में तुम्हें विजयी होना होगा।" राजकुमारी ने अपनी शर्त प्रकट की।

रामपाल ने बताया कि वह किसी भी शर्त को स्वीकार करने के लिए तैयार है। राजकुमारी ने उसको पुनः सचेत किया कि उसके हार जाने पर गुलाम बनकर रहना होगा।

"कृपया आप मुझे अपने मंदिर में ले जाइए। मैं भगवान के समक्ष यह

शपथ करूँगा कि यदि मैं हार जाऊँगा तो आपका गुलाम बनकर रहूँगा। मगर साथ ही आप यह शपथ कीजिए कि यदि आप हार जाएंगी तो मेरी पत्नी बन जायेंगी।" रामपाल ने निवेदन किया।

राजकुमारी के मन में यह संदेह कदापि न था कि वह हार जाएगी, इसलिए उसने इस शर्त को मान लिया और रामपाल को मंदिर में ले गई। पुजारी के समक्ष दोनों ने शपथ की। परीक्षा भी मंदिर में ही हुई।

रामपाल ने पात्र में अपना बायाँ हाथ रखकर एक पेटी निकाली और उसको हिलाया। उसमें से ध्वनि निकली, इसे देख राजकुमारी चकित रह गई।

"राजकुमारी, मैं जीत गया हूँ! मेरे साथ विवाह करोगी न!" रामपाल ने पूछा।

राजकुमारी ने सिर झुकाकर अपनी स्वीकृति दी। इस पर रामपाल ने अपने दायें हाथ से पात्र में से दोनों पेटियाँ निकालकर हिलाईं। उनमें से किसी में से ध्वनि न निकली। वास्तव में दोनों खाली थीं। उसने राजकुमारी के बायें हाथ के ऊपर के कुर्ते को ऊपर मोड़ दिया, तब उसकी कलई पर बंधी एक सिक्केवाली पेटी दिखाई दी।

"तुमने इस प्रकार सबको दगा देकर धोखा दिया। तुम धूर्त हो राजकुमारी!" रामपाल ने कहा।

"मैं धूर्त नहीं हूँ। मैंने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया है। बस! मेरे पिता ने मरते वक़्त मुझे हराने की बुद्धिमत्ता रखनेवाले का निर्णय करने के लिए यह उपाय बताया है। मुझे बड़ी खुशी है। मेरे पिता की आत्मा भी संतुष्ट हो जाएगी। आज तक मेरे गुलाम बनकर जो लोग रह रहे हैं, मैं उन्हें इसी वक़्त मुक्त कर देती हूँ। वे सब हमारे विवाह में भाग लेंगे और पुरस्कार प्राप्त करके अपने अपने घर चले जाएंगे।" राजकुमारी ने समझाया।

१५७. कठिन नौका मार्ग

स्वीडन देश के दक्षिण-पश्चिम के तट पर स्थित यह नौका मार्ग पहाड़ियों से भरे छोटे-छोटे टापुओं के मध्य में से है। इन टापुओं में अनादिकाल से ही मानवों के निवास रहे हैं। यहां पर पांच हजार वर्ष पुरानी समाधियां हैं। ई. पू. एक हजार वर्ष के (तीन हजार वर्षों के) शिलालेख, चित्र आदि यहां की शिलाओं पर हैं। उन चित्रों में मनुष्य, आयुध, नौकाएँ, जानवर आदि दिखाई देते हैं। आज भी वहां के पहाड़ों पर मछुओं के गांव बसे हैं।

अकबरी लोटा..
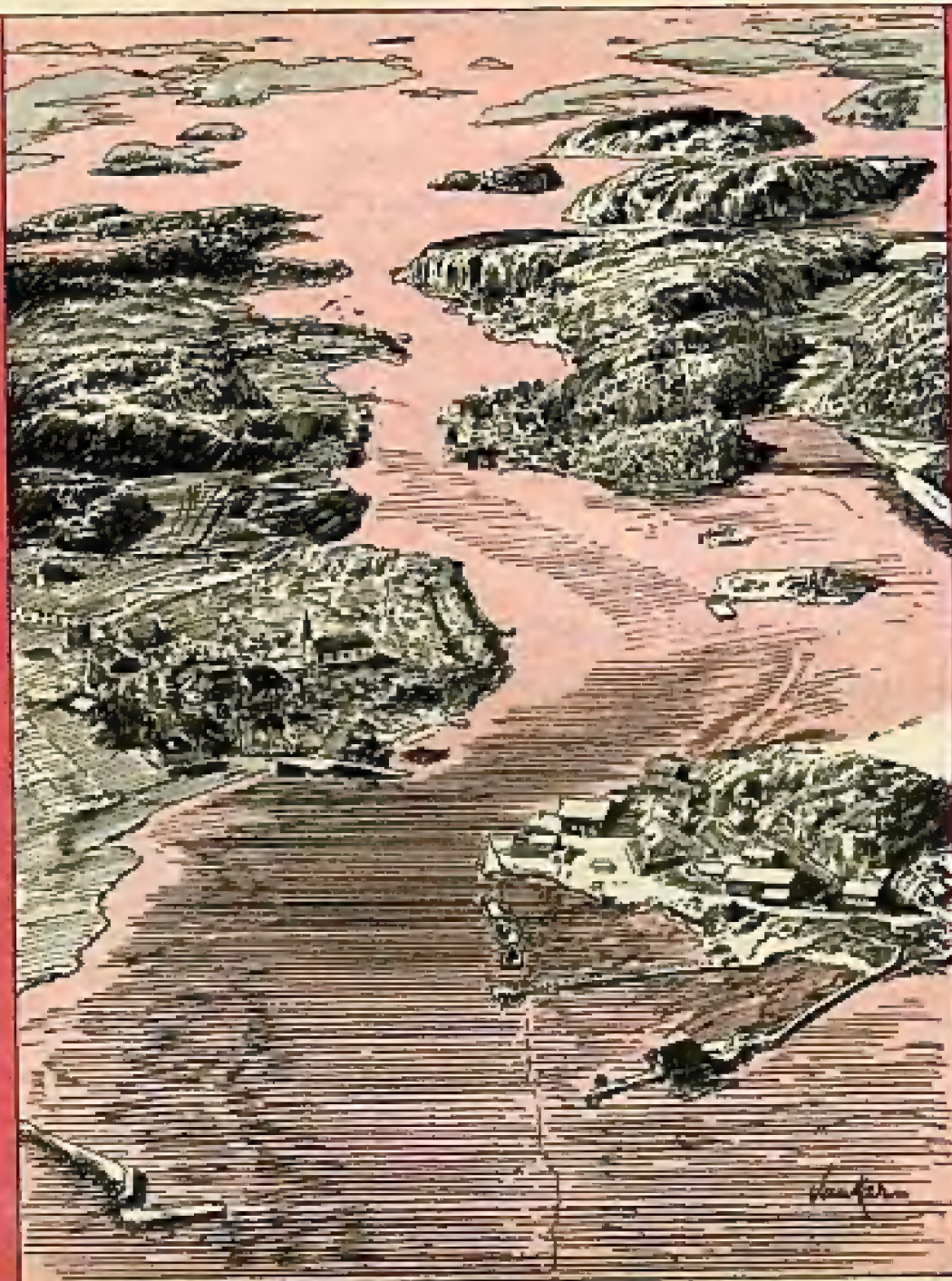
एक शहर में सलीम नामक एक गरीब युवक था। उसका बाप बचपन में ही गुज़र गया था। इसलिए उसकी माँ ने ही पाल-पोसकर उसे बड़ा किया। बड़ा होने पर सलीम एक दूकानदार के यहाँ नौकरी में लग गया। उसकी माँ ने जहीदा नामक एक युवती के साथ उसकी शादी की।

सलीम को अपने मालिक से जो तनख्वाह मिलती थी, वह उसके खानदान के खाना-कपड़े के लिए खर्च हो जाती थी। लेकिन उसकी बीबी जहीदा को चमकीली कपड़ों और मोती जड़े गहनों का शौक था। वह अपने शौहर की कमाई से जानकार थी, फिर भी वह अपने मन पर क़ाबू नहीं कर पाती थी। उसे अपनी कमज़ोरी पर स्वयं दुख था, फिर भी वह चमकीली कपड़ों तथा मोती जड़े गहने ला देने के लिए उस पर ज़ोर-दबाव डालती थी।

एक दिन सलीम नमाज के बाद छत पर बैठ कर एक पुराने बड़े लोटे से दूध पी रहा था। उस वक़्त वह यही सोच रहा था कि उसकी बीबी की इच्छा पुरी करने के लिए पैसे कहाँ से लावे? उसी वक़्त उसके हाथ का लोटा फिसल कर नीचे गिर पड़ा।

सलीम के घर के नीचे एक दूकान थी। उस दूकान के आगे एक गोरे साहब खड़े हो दूकानदार से बात कर रहा था। सलीम के हाथ से फिसला हुआ लोटा ठीक उस गोरे साहब की टोपी पर गिर पड़ा। टोपी पर गिरने की वजह से उसे कोई बड़ी चोट न लगी, मगर उसे बड़ा गुस्सा आया। गोरे साहब की ओर से दूकानदार सलीम को गालियाँ देने लगा।

गंगाधर त्रिपाठी

फिर क्या था, दूकान के सामने छोटी-सी भीड़ जमा हो गयी। उनमें से एक बूढ़े मुसलमान ने लोटे को उलट-पलट कर देखा और अचरज में आकर कहा—"अरे, यह तो बादशाह अकबर का लोटा है। मैं इसको पाँच सौ रुपयों में खरीद लूँगा।"

उस वक़्त गोरे साहब अपने गुस्से को भूल बैठा और उसने छे सौ रुपये की बोली लगाई। इसके बाद मुसलमान साहब तथा गोरे साहब ने होड़ लगा कर लोटे का दाम बढ़ाया। आखिर गोरे साहब ने उस लोटे को साढ़े सात सौ रुपयों में खरीदा।

सलीम के दादे का दोस्त एक बूढ़ा मुसलमान यह तमाशा देखता रहा। उसने वहाँ के लोगों को बताया कि सलीम का खानदान इस वक़्त जरूर गरीब हो गया है, मगर एक जमाने में मुगल बादशाहों के साथ नजदीक का रिश्ता रखता था। उसके घर में इस वक़्त जो हण्डा है, वह खुद बादशाह जहाँगीर का है।

गोरे साहब के मन में बादशाह जहाँगीर का हण्डा खरीदने की इच्छा पैदा हुई। उसे प्राचीन इतिहास से संबंधित मशहूर चीजों का संग्रह करने का शौक था।

सलीम ने गोरे साहब को अपना हण्डा दो हज़ार रुपये में बेच दिया। गोरे साहब यह सोच कर बड़ा खुश हुआ कि उसने अत्यंत इतिहास प्रसिद्ध मूल्यवान चीजों को सस्ते में ही खरीद लिया है। इससे सलीम के सामने रुपयों की जो समस्या थी, वह भी हल हो गयी।

सलीम ने अपनी बीबी को समझाया कि उन रुपयों को कपड़े व गहनों के पीछे खर्च करने के बदले उस पूंजी से व्यापार करना कहीं अच्छा है। जहीदा को भी यह सलाह अच्छी जंची। सलीम ने अपनी नौकरी छोड़ दी। निजी व्यापार शुरू करके जल्द ही उस शहर का सब से बड़ा व्यापारी बना। थोड़े ही समय में जहीदा को चमकीले कपड़े और मोतियों के गहने भी मिल गये।

चालाक

एक गाँव में घटक नामक एक युवक था। वह बड़ा ही साहसी और उद्दण्ड था। वह किसी की परवाह नहीं करता था। वह बलवान भी था, इसलिए उसको देख सब लोग डरते थे। लेकिन उसकी वजह से उसके माता-पिता और रिश्तेदार भी बदनाम हुए। इसलिए घटक के पिता ने उससे तंग आकर आखिर उसको घर से भगा दिया।

कुछ दिन तक घटक आवारा बनकर घूमता रहा, आखिर उसने दो चोरों के साथ दोस्ती कर ली। एक दिन वे चोर घटक को भी अपने साथ चोरी करने ले गये, तीनों मिलकर एक घर में घुस पड़े। चोरों ने बड़ी होशियारी से सारी चीजें चुरा लीं और घटक से कहे बिना उस घर से खिसक गये।

यह खबर जानकर घटक ने एक डब्बे को उठाकर जमीन से जोर से दे मारा। उस आवाज़ को सुनकर घरवाले जाग पड़े। सबने मिलकर उसको पकड़ लिया। सोचा कि इसीने चोरी की है, तब उसको राजा के सामने हाजिर करने के लिए चल पड़े।

रास्ते में एक किसान अपने दो अल्हड़ बैलों से तंग आ गया था, वह उनको क़ाबू में रखने का प्रयत्न करते हुए कह रहा था—"तुम्हें एक ही मुक्के से मारनेवाला कोई व्यक्ति होता तो क्या ही अच्छा होता।"

फिर क्या था, तुरंत घटक ने एक ही मुक्के से दोनों बैलों को मार डाला। इसे देख किसान गुस्से में आया। घटक को रस्से से बांधकर वह भी राजा से फ़रियाद करने चल पड़ा।

सोमशेखर गुप्त

थोड़ी दूर जाने पर उन्हें एक बूढ़ी दिखाई दी। वह चिल्ला-चिल्लाकर केले बेचते हुए यह गा रही थी–"एक पैसा देकर एक फल ले लो, मुक्का मारकर अपने रास्ते चलो।"

घटक ने बूढ़ी को एक पैसा देकर एक फल लिया और उसके सिर पर इस तरह मुक्का मारा जिससे बूढ़ी का सिर चकरा गया। वह भी घटक के प्रति राजदरबार में फ़रियाद करने और लोगों के साथ चल पड़ी।

तीनों फ़रियादी मिलकर घटक को राजा की सेवा में ले गये, घटक बिलकुल निश्चित और लापरवाह खड़ा था। राजा ने पहली फ़रियाद सुनकर घटक से पूछा–"तुमने इनके घर में चोरी की है या नहीं?"

"महाराज! कहीं चोरी करनेवाला आदमी डिब्बा बजाता है? मुझे थोड़े से चिउड़ों की जरूरत थी, इसलिए इनके घर में घुस पड़ा।" घटक ने जवाब दिया।

"तुमने सौ टके की बात कही।" मंत्री ने झट कहा।

बैलों को मारने की फ़रियाद का जवाब देते हुए घटक ने कहा–"महाराज! इसमें मेरा क्या दोष है? यह किसान इस बात की चिंता प्रकट कर रहा था कि उसके बैलों को एक ही मुक्के में मारनेवाला कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा

है। मैंने यह काम करके उसकी मदद पहुँचाई।"

"यह तो एक हज़ार टके की बात है।" मंत्री ने कहा।

"महाराज! इस बूढ़ी ने जो काम करने को कहा, वही काम मैंने करके दिखाया। मैंने सोचा कि मुक्का मारना भी फल की क़ीमत में शामिल है।" तीसरी फ़रियाद के उत्तर में घटक ने कहा।

"लाख टके की बात है।" मंत्री ने कहा।

राजा ने घटक पर आरोपित सभी फ़रियादों को खारिज करते हुए उसको मुक्त किया। मगर घटक वहाँ से तुरंत चला नहीं गया, बल्कि मंत्री की ओर मुड़कर कहा–"बात कही तो उसका पालन करना चाहिए। अपनी बातों का मूल्य दिला दीजिए।"

सच बात तो यही थी कि मंत्री घटक के लिए सौ, हज़ार तथा लाख टके के ऋणी हो गये थे। राजा ने घटक को मंत्री के द्वारा वे रुपये दिलाये।

कोई दूसरा होता तो वह धन लेकर अपने रास्ते चला जाता। मगर घटक वैसे चुपचाप जानेवाला व्यक्ति न था। वह सीधे मंत्री के घर चला गया, द्वार पर खड़े हो दर्प से बोला–"मुझे अगर कोई तृप्ति के साथ आज भर पेट खाना खिलायेंगे तो यह सारा धन मैं उसे दे दूँगा।"
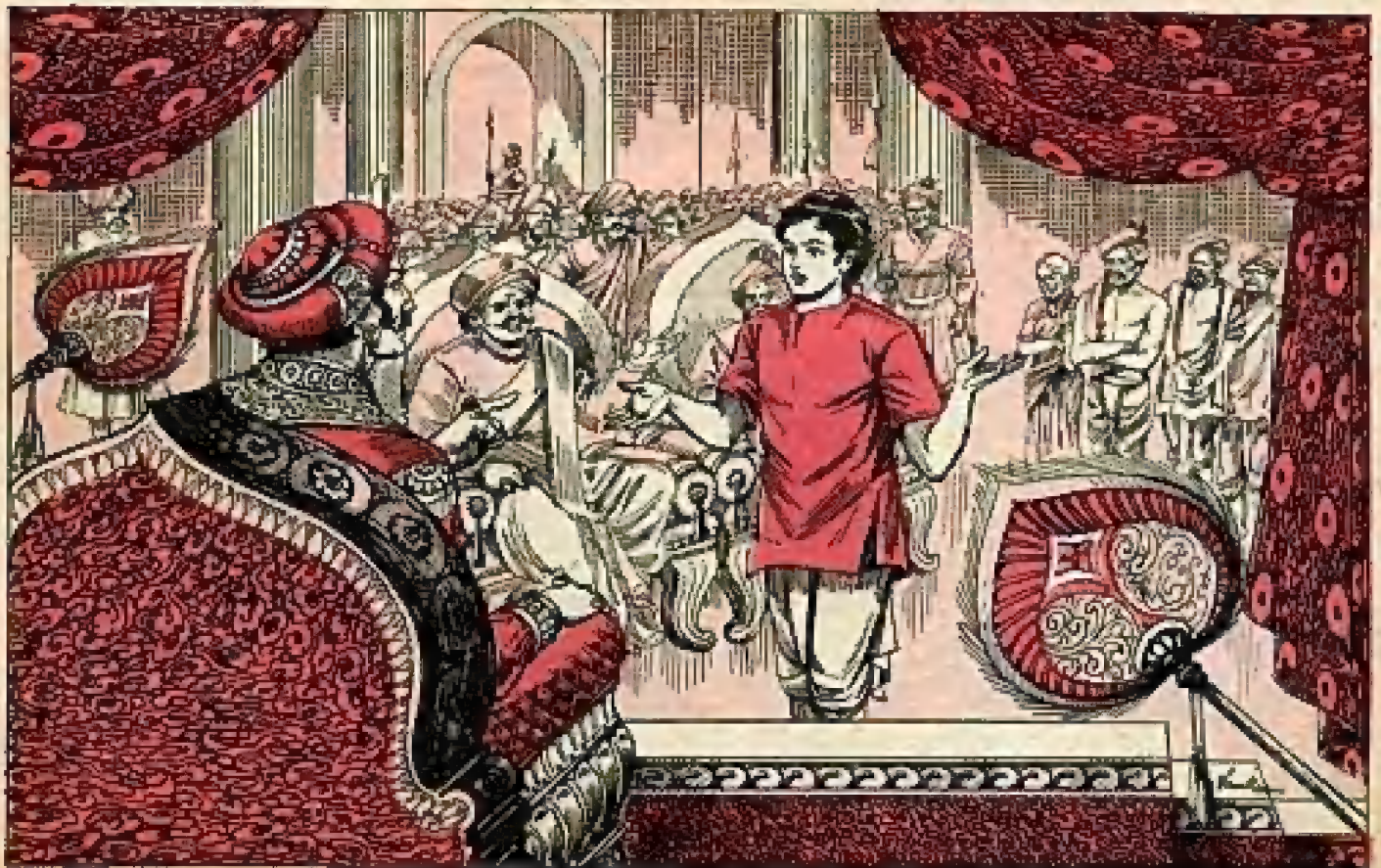
मंत्री के एक सुंदर कन्या थी। उसकी एक प्यारी सहेली थी। उसने सोचा कि घटक का सारा धन अपनी मालिकिन को प्राप्त हो जाय, इस ख्याल से लोभ में पड़कर उसने घटक को बुलाया और उसको खाना खिलाने की मंत्री-पुत्री को प्रेरणा दी।

मंत्री की पुत्री ने अपनी सहेली का कहना मान लिया और घटक को भीतर निमंत्रित किया। अच्छे अच्छे व्यंजन तैयार कराये, घटक को एक आसन पर बिठाया, उसने स्वयं परोसकर खाना खिलाया, आखिर पान भी खिलाया।

घटक ने अपना सारा धन मंत्री की पुत्री को दिया। सीधे फिर राजदरबार में जाकर कहा—"महाराज, मैं अपना एक छोटा-सा संदेह पूछना चाहता हूँ। कृपया उसका उत्तर दीजिए।"

राजा ने मंदहास करके कहा—"पूछो।"

"एक व्यक्ति को आसन लगाकर बिठानेवाली कौन होती है? स्नान कराकर स्वयं परोसकर खाना खिलानेवाली कौन है? उसका सारा धन लेकर सुरक्षित रखनेवाली कौन है?" घटक ने राजा से पूछा।

"और कौन? उसकी पत्नी होती है? तुमने यह सवाल क्यों पूछा?" राजा ने कहा।

घटक ने हँसकर उत्तर दिया—"आप कृपया मंत्री की पुत्री से पूछकर देखिए। मैंने यह सवाल क्यों पूछा है?"

राजा ने सारी बातें समझ लीं। मंत्री एकदम क्रोध में आया कि उसकी पुत्री धन के लोभ में पड़कर उस दुष्ट के चंगुल में फँस गई है। राजा ने मंत्री को सांत्वना देकर कहा—"यह युवक तेज स्वभाव का है। तुम्हारी कन्या के योग्य पति होगा। चिंता मत करो, तुम इन दोनों का विवाह कर दो।"

घटक ने न केवल मंत्री की पुत्री के साथ विवाह किया, बल्कि राजा के दरबार में उप मंत्री का पद भी प्राप्त किया और अपने दिन आराम से बिताया।

कपट मांत्रिक

प्राचीनकाल में एक राजा के यहाँ चण्डभट्ट नामक एक जादूगर था। वह छोटे-मोटे जादू करके लोगों को आश्चर्य चकित करता था। अपने को मांत्रिक बताकर धोखा देता। चण्डभट्ट इस प्रकार जो धोखा देता था, इस काम में राजदरबार का एक कर्मचारी मदद पहुँचाता और वह भी लाभ उठाता था।

एक दिन सूर्यग्रहण के उपरांत रानी नहाने के लिए नदी पर गई। अपने सारे गहने उतारकर नदी के किनारे रख दिया। उस वक़्त वहाँ पर रानी की परिचारिकाओं को छोड़ और कोई व्यक्ति न था। रानी ने नहाने के बाद लौटकर देखा, उसके गहनों में से एक क़ीमती हार गायब था। मगर रानी की सभी परिचारिकाएँ विश्वासपात्र थीं। वे सब रानी के मायके से दहेज में प्राप्त थीं, इसलिए रानी ने ज़ोर-दबाव डालकर उनसे पूछने में संकोच किया।

मगर राजमहल में लौटते ही रानी ने सारी बातें राजा से कह दीं। राजा ने तुरंत चण्डभट्ट को बुला भेजा और चोर का पता लगाने का आदेश दिया।

चण्डभट्ट ने हँसकर उत्तर दिया– "महाराज, यह कौन बड़ी बात है? कल इस वक़्त तक मैं हार के साथ चोर को पकड़वा दूँगा। यह जिम्मेदारी मेरी है।"

यह कहकर चण्डभट्ट अपने घर चला गया। इसके थोड़ी देर बाद मालिनी नामक एक परिचारिका दौड़ आई, उसके पैरों पर गिरकर बोली–"महाशय! लोभ में पड़कर मैंने रानी के हार को नदी के तट पर ही चुराया है। मैंने नहीं सोचा था कि बात आप तक पहुँचेगी। कल आप मुझे चोर ठहरायेंगे तो मेरी गत

राजकुमार भुवाल्का

क्या होगी? कृपया मेरी रक्षा कीजिए। आप यह हार लेकर किसी तरह रानी के पास पहुँचवा दीजिए। लेकिन मेरा नाम प्रकट न होने दीजिएगा। मैं आपकी इस भलाई को जिंदगी भर भूल नहीं सकती।" इन शब्दों के साथ मालिनी ने वह हार चण्डभट्ट के हाथ दे दिया।

चण्डभट्ट ने मालिनी को समझाया—"तुम डरो मत। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। लेकिन यह बात तुम किसी से मत कहो कि तुम मेरे पास आ गई थी। इससे तुम खतरे में फँस जाओगी।"

चण्डभट्ट के मन में उस हार को हड़पने की कुबुद्धि पैदा हुई। इसके लिए उसने एक छोटा-सा जादू किया। एक कागज पर प्याज के रस से लिखा—"हार नदी में बह गया है।" दरबार में सबके सामने कागज़ पर धूप का धुआँ लगवाया। तब अक्षर प्रकट हुए। सबने यह विश्वास किया कि रानी का हार चुराया नहीं गया, बल्कि नदी में गिरकर बह गया है।

दूसरे दिन सवेरे चण्डभट्ट अपने मित्र राज कर्मचारी को साथ लेकर एक सुनार के घर गया, उसको वह मूल्यवान हार दिखाकर उसे बेचने को कहा। ठीक उसी वक़्त मालिनी राजभटों को साथ लेकर वहाँ पर आई। राजभट चण्डभट्ट तथा उसके साथी को बन्दी बनाकर राजदरबार में ले गये।

मालिनी ने भरी सभा में राजा से कहा—"महाराज! ये चण्डभट्ट अव्वल दर्जे के कपट वंचक हैं। जब से मुझे मालूम हुआ, तब से मैं इसके कपट को प्रकट करने का उपाय सोच रही थी। आखिर रानीजी का हार चुराकर इसके कपट की पोल खोल सकी।" इन शब्दों के साथ मालिनी ने सारा वृत्तांत सुनाया।

मालिनी की बुद्धिमत्ता पर राजा के साथ सभी दरबारी आश्चर्य में आ गये। राजा ने मालिनी को बड़ा पुरस्कार दिया और चण्डभट्ट तथा उसके साथी को देश निकाले का दण्ड दिया।

रामचन्द्रजी ने जब सुग्रीव से रावण के निवास का पता पूछा तब उनकी व्यथा देख सुग्रीव ने भी आँसू बहाते हुए कहा–"हे रामचन्द्र! मैं नहीं जानता कि रावण कहाँ रहता है? लेकिन मैं यह शपथ ले सकता हूँ कि सीताजी को पुनः प्राप्त करने में आप के लिए आवश्यक सारा प्रयत्न मैं करूँगा। आप को प्रसन्न करूँगा। आप धीरज धरिये। मैं भी आप की भांति अपनी पत्नी को खो बैठा हूँ। मगर मैंने हिम्मत नहीं हारी।"

सुग्रीव के द्वारा सांत्वना पाकर रामचन्द्र ने अपने अश्रुसिक्त मुख मण्डल को पोंछ लिया; तब सुग्रीव से कहा–"तुमने एक सच्छे मित्र की भांति बात की। इस समय में जिस स्थिति में हूँ, इस हालत में सांत्वना तथा सहायता देनेवाले तुम जैसे हितैषी का मिलना दुर्लभ है। तुम्हें रावण का पता लगाना होगा और सीताजी का अन्वेषण कराना होगा। अब यह बताओ कि तुम मुझसे क्या चाहते हो? इस बात की शंका न करो कि वह कार्य मेरे द्वारा होगा या नहीं। यह बात सत्य है कि मैं वाली का वध करूँगा। आज तक मैं कभी असत्य न बोला। भविष्य में भी असत्य वचन नहीं कहूँगा।"

यह आश्वासन पाकर सुग्रीव तथा उसके वानर मंत्री बहुत प्रसन्न हुए, तब सुग्रीव ने रामचन्द्रजी से यों कहा–"हे राम! मेरे भाई वाली ने मुझे धोखा दिया और मेरी

४ वाली तथा सुग्रीव का युद्ध

कितने दिन जीऊँ? वाली की मृत्यु में ही मेरी कुशलता है। मैं आप के आश्रय में आ गया हूँ।"

ये बातें सुन रामचन्द्रजी हंस पड़े और बोले–"मैं अपने एक ही बाण के द्वारा वाली का वध कर सकता हूँ। वह ज्यों ही मेरी दृष्टि में पड़ेगा, उसके दूसरे ही क्षण मर जाएगा। तुम भी मेरी ही भांति विषाद में हो। तुम्हारा दुख शीघ्र ही दूर होगा।"

इसके उपरांत सुग्रीव ने वाली के बल एवं पराक्रमों के बारे में यों कहा–वाली प्रातःकाल के पहले जागता है। सूर्योदय के पूर्व ही चार समुद्रों में स्नान करके संध्यावंदन करता है। पहाड़ों के शिखरों पर चढ़कर बड़ी बड़ी चट्टानों को गेंदों की भांति उछाल कर पकड़ता है। जंगल के बड़े-बड़े वृक्षों को तोड़ अपनी ताक़त की जाँच करता है। एक हज़ार हाथियों की ताक़त रखनेवाले दुंदुभि नामक राक्षस का भी उसने वध किया है।

दुंदुभि भैंसे की आकृतिवाला राक्षस है। वह अपने बल के मद में आकर पहले समुद्र के पास गया और उसको द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा।

समुद्र ने उसको समझाया–"बेटा, तुम्हारे साथ युद्ध करने की शक्ति मुझ में

पत्नी का अपहरण किया है। मैं नहीं जानता कि मुझे क्या करना चाहिए। इस प्रकार चिंता पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा हूँ! बलवान वाली ने मुझ को राज्य से च्युत ही नहीं किया, बल्कि मेरा वध कराने के अनेक प्रयत्न किये। उसने मेरा वध करने के लिए जितने वानरों को भेजा उन सबको मैंने मार डाला। मैं अपने भाई के भय से ही आप के पास आ न पाया। इस वक़्त हनुमान वगैरह मेरी बड़ी सहायता कर रहे हैं। मेरे प्रति स्नेहभाव रखते हुए ये लोग मेरी रक्षा कर रहे हैं। मैं जहाँ भी जाऊँगा, ये लोग मेरे पीछे चलते हैं। सदा मेरी रक्षा किया करते हैं। मैं इस प्रकार

नहीं है। इसके लिए योग्य व्यक्ति हिमवान है। उसके साथ युद्ध करोगे तो तुम्हारी भुजाओं की खुजली दूर हो जाएगी।"

दुंदुभि यह सोचकर खुश हुआ कि समुद्र उसको देख डर गया है, तब दुंदुभि वायुवेग के साथ हिमालयों में गया। वहाँ पर हाथी जैसे विशाल पहाड़ी शिलाओं को अपने सींगों से उखाड़ कर फेंकते हुए गरज उठा।

यह बात मालूम होते ही हिमवान एक पहाड़ की चोटी पर आ खड़ा हुआ और बोला–"दुंदुभि! तुम युद्ध के द्वारा मुझ को क्यों सताते हो? मैं अब युद्ध करने योग्य नहीं रहा। यहाँ पर अनेक मुनि तपस्या कर रहे हैं। यह युद्ध करने का स्थल नहीं है।"

इस पर दुंदुभि ने क्रोध में आकर कहा–"यदि तुम युद्ध करने की क्षमता नहीं रखते हो तो बताओ, मेरे साथ कौन युद्ध कर सकता है?"

"अगर तुम युद्ध ही करना चाहते हो तो किष्किंधा के निवासी वाली के यहाँ जाओ। उसको हराना असंभव है।" हिमवान ने समझाया।

इसके उपरांत दुंदुभि किष्किंधा के नगर द्वार तक पहुँचकर गरज उठा। वह

वहाँ के पेड़ों को तोड़ते, अपने खुरों से जमीन को खुरेदते भीभत्स करने लगा। अपने सींगों से नगर के द्वार पर प्रहार भी करने लगा। वाली ने उस ध्वनि को सुन लिया। वह अंतःपुर से अनेक नारियों को साथ लेकर दुंदुभि के पास आया और बोला–"अबे दुंदुभि! मैं तुमको जानता हूँ। इस तरह गरजते क्यों हो? क्या तुम्हें अपने प्राण प्यारे नहीं हैं?"

ये बातें सुन दुंदुभि क्रुद्ध हो उठा और बोला–"औरतों के सामने डींग मारने से फ़ायदा ही क्या है? मेरे साथ युद्ध करके अपनी शक्ति का परिचय दो; या नहीं

तो मैं कल सुबह तक तुम्हें मोहलत देता हूँ। जो भी सुख भोगना चाहते हो, आज रात भर भोगो। अपने रिश्तेदार एवं बंधुओं को जो कुछ लेना-देना है, पूरा कर लो। मित्रों से विदा माँग लो। अपने नगर को एक बार दिल भरकर देख लो। अपने स्थान पर किसी दूसरे को राजा नियुक्त करो, तब मैं तुम्हारे घमण्ड को चूर करूँगा।"

उस समय वाली ने सभी नारियों को अंत:पुर में भेज दिया। इंद्र के द्वारा प्राप्त कांचन माला को कंठ में पहन लिया। दुंदुभि से जूझ पड़ा। उसके सींग पकड़ कर चारों ओर घुमाया, ज़मीन पर पटक कर सिंहनाद किया। तब दुंदुभि के कानों से ख़ून बहने लगा।

फिर भी उन दोनों ने बड़ी देर तक मुट्ठियों, घुटनों, पत्थरों तथा पेड़ों के साथ युद्ध किया। क्रमश: दुंदुभि का बल क्षीण होने लगा और वाली का बल बढ़ता गया। इसे भांप कर वाली ने दुंदुभि को ऊपर उठा कर ज़मीन पर दे मारा। दुंदुभि उसी वक़्त ठण्डा हो गया। इसके बाद दुंदभि के कलेवर को उठाकर हिलाया और उसको एक योजन की दूर पर फेंक दिया। मुँह से ख़ून गिरने वाला वह कलेवर मतंग मुनि के आश्रम के ऊपर से जाकर गिरा। उसके धक्के से आश्रम के कुछ पेड़ टूट कर गिर पड़े।

आश्रम में ख़ून के धब्बे देख मतंग मुनि कुपित हुआ, उसका कारण वाली समझ कर उसे शाप दिया कि यदि वाली ने मुनि के आश्रम के पांच कोस की दूरी के अंदर क़दम रखा तो वह मर जाएगा, तब वाली के सेवकों को अपने वन में से भगा दिया। यह भी कहा कि अगर वे लोग एक दिन के अन्दर आश्रम के प्रदेश को न छोड़े तो पत्थर बन जाएँगे।

अपने पास लौटे सेवकों को देख वाली ने पूछा—"तुम लोग लौट क्यों आये हो? वानरों को कोई खतरा तो नहीं हुआ

है न?" सेवकों ने वाली को सारा वृत्तांत सुनाया। इस पर वाली ने महामुनि मतंग से निवेदन किया कि वे अपने शाप को वापस ले ले। मगर उन्होंने अनसुनी कर दी। उस दिन से लेकर वाली ने ऋश्यमूक पर्वत की ओर देखना तक बंद किया है। इस शाप के द्वारा सुग्रीव का लाभ हुआ। वह अपने मंत्रियों के साथ ऋश्यमूक पर्वत पर निर्भयता के साथ रहने लगा।

सुग्रीव ने रामचन्द्रजी को वाली का यह सारा वृत्तांत सुनाकर उन्हें दुंदुभि का कलेवर दिखाया, तब कहा-"यहाँ पर ऐसे मोटे सात सालवृक्ष हैं। इनमें से किसी भी वृक्ष को पार कर जाने लायक़ तीर छोड़ने की शक्ति वाली में है। ऐसे बलवान को आप युद्ध में कैसे मार सकेंगे? यही मेरा संदेह है।"

इस पर लक्ष्मण ने हंस कर कहा-"कौन सा कार्य करके दिखाने पर तुम्हारा रामचन्द्रजी पर विश्वास जम सकता है?"

"रामचन्द्रजी भी इस सालवृक्ष को भेद कर जाने लायक़ तीर छोड़ कर, उसी बाण के द्वारा दुंदुभि के कलेवर को दो सौ हाथों दूर गिरने लायक़ कर दे तो मैं विश्वास कर सकूँगा कि रामचन्द्रजी वाली का वध कर सकते हैं।" सुग्रीव ने लक्ष्मण से कहा।

इसके बाद रामचन्द्र की ओर मुड़ कर कहा-"हे राम! वाली महान बलवान है। वह आज तक पराजय की बात तक नहीं जानता है। उसके बल से मैं परिचित हूँ। इसलिए मैं आपको डराने के ख्याल से ये बातें नहीं कह रहा हूँ, बल्कि वाली के प्रति मेरे मन में जो भय है, वही प्रकट कर रहा हूँ। कृपया आप अन्यथा न समझियेगा।"

रामचन्द्रजी ने इसके उत्तर में मुस्कुरा कर कहा-"मैं तुम्हारे मन में अपने पराक्रम के प्रति विश्वास पैदा करने लायक़ कार्य करूँगा।" इन शब्दों के साथ श्रीराम ने दुंदुभि के कलेवर को अपने पैर के अंगूठे से उठाकर बीस कोस की दूरी पर फेंक दिया।

इसे देख सुग्रीव ने कहा—"रामचन्द्रजी! इस वक़्त वह कलेवर सूख गया है। इसलिए हल्का हो गया है। दुंदुभि के साथ युद्ध करके वाली पूर्ण रूप से जब थक गया था, उस स्थिति में उसने दुंदुभि के कच्चे कलेवर को इतनी दूर फेंक दिया था। इसलिए आप के तथा वाली के बल के बीच जो अंतर है, उसके संबंध में मेरी शंका दूर नहीं हुई है। एक सालवृक्ष को भेदने लायक़ बाण चलायेंगे तो मैं आप दोनों के बलों का अनुमान लगा सकता हूँ।"

सुग्रीव के मन में अपने प्रति विश्वास पैदा करने के लिए रामचन्द्रजी ने धनुष लेकर सालवृक्ष को निशाना बनाकर एक बाण छोड़ दिया। एक साथ उस बाण ने सातों सालवृक्षों को भेद कर एक पहाड़ को भी भेद दिया और पृथ्वी में जा धंसा। इसे देख सुग्रीव आश्चर्य चकित हो गया। उसने हाथ जोड़कर रामचन्द्र के सामने साष्टांग प्रणाम किया और कहा—"रामचन्द्रजी! आप इंद्र तथा देवताओं को भी पराजित कर सकते हैं। इस में कोई संदेह नहीं है। आप वाली का वध बड़ी आसानी से कर सकते हैं। आपके साथ मैं मैत्री कर सका, इस बात की मुझे बड़ी प्रसन्नता है।"

रामचन्द्रजी ने बड़े प्रेम से सुग्रीव के साथ आलिंगन किया। लक्ष्मण के साथ परामर्श करके कहा—"सुग्रीव! चलो, हम किष्किधा में जायेंगे। तुम हम से थोड़ी देर पहले जाकर वाली को युद्ध के लिए निमंत्रण दो।"

इसके बाद रामचन्द्रजी, लक्ष्मण और सुग्रीव के अनुचर किष्किंधा में जाकर नगर के बाहर के वन में पेड़ों की ओट में छिप गये।

सुग्रीव ने कसकर लंगोटी बांध ली और वाली को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा। अपने भाई की पुकार सुन क्रुद्ध हो वाली बाहर आया। दोनों ने भीष्ण युद्ध किया।

परस्पर मुष्ठियों तथा हथेलियों से वार किया।

दोनों एक ही प्रकार के थे। इसलिए रामचन्द्रजी पहचान न पाये कि उनमें कौन सुग्रीव है और कौन वाली है? इसलिए रामचन्द्रजी ने बाण का प्रयोग नहीं किया। इस बीच सुग्रीव हार कर भागने लगा।

वाली ने सुग्रीव का मुनि मातंग के आश्रम तक पीछा किया, सुग्रीव खून बहाते मतंग के आश्रम में पहुँचा, तब वाली यह कहते किष्किंधा को लौट चला—"तुम बच गये।"

तब रामचन्द्रजी हनुमान तथा लक्ष्मण को साथ लेकर वे भी सुग्रीव के पीछे चले।

सुग्रीव ने राम को देखते ही सिर झुका कर कहा—"आपने अपना पराक्रम दिखाया, मुझको वाली के साथ युद्ध करने की प्रेरणा दी, वाली के हाथ मुझे पिटवाया, यह कैसा काम है। यही आपका न्याय है? यदि पहले ही बता देते कि मैं वाली का वध न कर सकूँगा तो मैं उसके साथ युद्ध करने न जाता।"

"सुग्रीव! वाली का वध न करने का कारण भी तो सुनो। तुम दोनों के अलंकार, रूप, चाल, कंठ-ध्वनि, आँखें, शरीर सब एक ही प्रकार के हैं। तुम दोनों के बीच मुझे थोड़ा भी अंतर दिखाई नहीं दिया। शायद मेरे बाण का दुरुपयोग हो जाय। तुम्हारे प्राणों के लिए खतरा पैदा हो जाय। इसीलिए चुप रहा। मैं, लक्ष्मण तथा सीताजी सब तुम्हारे अधीन में हैं। इसलिए मुझ पर संदेह न करो। तुम फिर जाकर वाली के साथ युद्ध करो। इस बार मेरी पहचान के लिए तुम कोई चीज धारण करो। मैं एक ही बाण के द्वारा वाली का वध कर बैठूँगा। हे लक्ष्मण, खिले हुए गजपुष्पी को तोड़ कर सुग्रीव के कंठ में लपेट दो।"

तब जाकर राम की बातों पर सुग्रीव का विश्वास जम गया। वह गजपुष्पी को कंठ में लपेट कर पुनः किष्किंधा की ओर चल पड़ा।

समर वाणी

रिपूणाम् धर्षणम् शूरा
मर्षयंति न संयुगे,
जानन्तस्तु स्वकम् वीर्यम्
स्त्रीसमक्षम् विशेषत: ।। ।। १ ।।

[शूर व्यक्ति युद्ध में शत्रु का तिरस्कार सह नहीं सकते । तिस पर भी शत्रु से भी अपने बल को अधिक जाननेवाले लोग स्त्रियों के समक्ष में बिलकुल सहन नहीं कर पाते ।]

अधर्षिताणाम् शूराणाम्,
समरे ष्वनिवर्तिनाम्,
धर्षणामर्षणम् (भीरु!)
मरणा दतिरिच्यते ।। ।। २ ।।

[युद्ध में पीठ न दिखानेवाले शूरों के लिए यदि किसी ने सामना किया तो उसे सहनकर चुप रहना मृत्यु से भी अधिक होता है ।]

शूराणाम् हि मनुष्याणाम्
त्वद्विधानम् महात्मनाम्
विनष्टे वा, प्रणष्टे वा
शोक स्सर्वार्थनाशन: ।। ।। ३ ।।

[शूर तथा महात्माओं के लिए अज्ञात तथा नश्वर वस्तुओं के संबंध में दुख करना सब प्रकार से अहितकर है ।]

—वाल्मीकि

शूर – वीर

Photo by S. B. Takalkar

पुरस्कृत परिचयोक्ति

मैं मन ही मन मुस्काऊँ

प्रेषिका : निशा श्रीवास्तव

Photo by K. K. Rao

१०९/१६, नेहरू नगर,
कानपुर (उ. प्र.)

मैं खुश हो नाच दिखाऊँ

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

* परिचयोक्तियाँ फरवरी १० तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।
* परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अप्रैल के अंक में प्रकाशित की जायेंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा आवरण पृष्ठ:
आहार्य

तीसरा आवरण पृष्ठ:
आंगिक

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-600026. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

मैं गंदे पैरों से
भला प्लूटो
को अन्दर
कैसे लाता?
HT-HSI 8124 R
अन्तर्राष्ट्रीय गुणमान के
अनुरूप निर्मित सैनेटरीवेयर
और वॉल टाइल

Photo by: ANANT DESAI

REHEARSING

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 1975 Regd. No. M. 5452

मित्र-भेद